Shivaji Dehade

भजनामृत

2005-2006

अन्तर्राष्ट्रीय कथा व्यास - भागवत मर्मज्ञ आचार्य

पं. डॉ. श्री श्यामसुन्दर पाराशर "शास्त्री"

पत्राचार का पता

334—ए, चैतन्य बिहार कॉलोनी, फेस – 1

वृन्दावन, मथुरा (उ.प्र.)

फोन : 5531864 मोबा.: 9837026101, 9219510270

कार्यालय – रामजिबाई सत्संग भवन, वृन्दावन

फोन : 2442070, 3092304, मोबा.: 9358709512

- भागवत
श्रेष्ठ और
का अपने
एक भक्त
रा उसकी
गोस्वामी
खान करते
नर पावहिं
वालों से
लगा देते
र लीलाओं
ते है।
रस में डूबे

, पं. सरजू
नके कठिन
मेरी हार्दिक
क्ति प्रदान

संपादक मण्डल

आचार्य संतोष गौतम
नया रामनगर, उरई (जालौन) उ.प्र.
फोन : 05162–253746

पं. सरजू शरण पाठक (सितारवादक)
पत्रकार
टीचर्स कॉलोनी, गुरसरांय (झाँसी) उ.प्र.
मोबाइल : 9415503502

प्रकाशक

पं. बृजकिशोर पाराशर
भिरतवार, जिला ग्वालियर (म.प्र.)
फोन : 07525 – 287273

मुद्रक

मुद्रक :
माँ ग्राफिक्स
जे–20, गांधी नगर
ग्वालियर (म.प्र.)
फोन : 0751–4052457

डिजायन :
क्षमा ग्राफिक्स
ग्वालियर (म.प्र.)

प्रचार सामग्री के लिये संपर्क : नीरज मंगल 9301106682

दो शब्द

देवदत्तामिमां वीणां स्वरब्रह्मविभूषिताम्।
मूर्च्छयित्वा हरिकथां गायमानश्चराम्हयम्।।

- भागवत

भजन ईश्वरीय प्रेम की अनुभूति कराने का सर्वश्रेष्ठ और सरलतम माध्यम है। भजनों के द्वारा एक भक्त भगवान का अपने भावों से श्रृंगार करता है। भगवत कथा श्रवण से जो रस एक भक्त के हृदय में भर जाता है, भक्त भजनों की पुष्पान्जलि द्वारा उसकी सुन्दर अभिव्यक्ति करता है। रामचरित मानस में भी गोस्वामी तुलसीदास जी ने भगवत गुणों के गानकी महिमा का बखान करते हुए कहा है 'कलियुग केवल हरिगुण गाहा गावहिं नर पावहिं भवथाहा'। कलयुग में तो भगवत नाम का आश्रय लेने वालो से भगवान सहज ही प्रसन्न होकर उन्हें भवसागर से पार लगा देते है। भजनों के द्वारा ही भक्त भगवान के चरित्रों, गुणों और लीलाओं का गान कर भक्ति की चूनर को इन्द्रधनुषी रंगों से सजाते है।

सभी रसिक भक्त भजनों के द्वारा निरन्तर भक्ति रस में डूबे रहें ऐसी प्रभु चरणों में कामना है।

इस भजनामृत का प्रमुख श्रेय डॉ. ममता गोयल, पं. सरजू शरण पाठक एवं पं. ब्रजेश त्रिपाठी को जाता है। जिनके कठिन परिश्रम और लगन से यह संग्रह प्रकाशित हो सका। मेरी हार्दिक कामना है कि प्रभु इन्हें सदैव सद्बुद्धि, प्रसन्नता और भक्ति प्रदान कर अपनी कृपा का पात्र बनाए रखें।

- श्याम सुन्दर पाराशर "शास्त्री"

भजन सूची

बधाईयाँ

पदावली

पद

पं. श्याम सुन्दर ''शास्त्री''

एक परिचय

गालव ऋषि की तपस्थली एवं संगीत संम्राट तानसेन जी की साधना भूमि ग्वालियर जिले मुख्यालय से ७२ किमी दूर बसा नगर भितरवार जहाँ माँ पार्वती नदी का कल–कल करता हुआ कलरव बरबस सभी के मन को मुग्ध कर देता है ऐसी पुण्यभूमि में पूज्य पं. श्री श्यामसुन्दर पाराशर जी का जन्म ज्येष्ठ की वट्अमावस्या वि. सं. २०२४ तद्नुसार दिनांक ८.६.१९६७ को एक उत्तम ब्राह्मण कुल में हुआ। आपके पितामह सनाढ्य कुल भूषण पं. श्री जीवनलाल जी पाराशर एक ज्योतिष के महान विद्वान थे तथा विशुद्ध ब्राह्मणवृत्ति से ही अपनी जीविका चलाते थे अतः उनका आदर प्रत्येक प्राणी के मन में स्वाभाविक रूप से था। श्री शास्त्री जी के माता–पिता श्री पं. भगवानलाल जी पाराशर एवं माता श्रीमती विमला देवी जी अत्यंत धार्मिक, गृहस्थ, समाजसेवी है। माता–पिता ने जब बालक श्याम सुन्दर को बाल्यावस्था से ही भगवत कथा श्रवण तथा भगवत सेवा की रूचि से परिपूर्ण देखा। तो इस बालक को वृन्दावन भेजने का निश्चय किया ताकि वैदिक संस्कारों से भली भांति परिष्कृत होकर सच्चे अर्थो में ब्राह्मण बनकर जन कल्याण कर सके।

वृन्दावन के मूर्धन्य विद्वान वेदमूर्ति पं. श्री राजवंशी जी द्विवेदी जी महाराज के चरणों में इस बालक को माता–पिता ने समर्पित कर दिया, जहाँ इस बालक के सम्पूर्ण वैदिक संस्कार करके श्री गुरूदेव ने इन्हें

"धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के द्वारा प्रतिष्ठापित श्री धर्मसंघसंस्कृत विद्यालय वृन्दावन में प्रवेश दिया। इस विद्यालय में ७ वर्ष रहकर व्याकरणादि शास्त्रों का अध्ययन करके शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की तथा "श्यामसुन्दर शास्त्री" नाम से विभूषित हुए।

तदुपरान्त वृन्दावन की रमणरेती में २५ वर्षों से अखण्ड वास करने वाले बरेली के भूतपूर्व सांसद एवं कुशल राजनीतिज्ञ श्री सेठ विशनचंद जी के सानिध्य में रहकर नित्य भगवान रूद्र का विविध पुष्पों से श्रृंगार एवं अभिषेक करते हुए निवास किया। इसी अवधि में श्री शास्त्री जी ने श्रीमद्भागवत एवं शास्त्रीय संगीत का विधिवत् अध्ययन किया।

एक बार रमणरेती के संतो ने मिलकर श्री संतदास जी महाराज के आश्रम में श्री शास्त्री जी को प्रथम बार श्रीमद्भागवत कथा हेतु व्यासपीठ पर आसीन किया उस समय शास्त्री जी की अवस्था मात्र १६ वर्ष की थी। शुक स्वरूप श्री शास्त्री जी के मुख से भागवत कथा श्रवण कर सभी महात्मा मुग्ध हो गये और आशीर्वाद स्वरूप एक श्लोक निर्मित करके स्वामी श्री केशवानंद सरस्वती जी ने प्रदान किया –

श्यामावामाकृतपदनतिः सुन्दरः श्यामपूर्वः
श्रीमद् भागवते महामुनिकृतेऽनबष्ठतो येन यत्नः ।
शाब्दे शास्त्रे कृतपरिचयो गीत संगीत वाद्ये
सोऽयं प्राप्तः सदसि भवतां सदकथां वस्तुमत्र ।

श्री विशनचंद्र सेठ जी ने भी एक बार श्री शास्त्री जी से कथा श्रवण की कामना प्रगट की तो,

प्रतिदिन श्री सेठ जी के यहाँ भी कथा होने लगी।

एक दिन सेठ जी के लघुभ्राता श्री त्रिलोकचंद सेठ जी वृन्दावन आये और उन्होंने जब अपने भाई के साथ बैठकर श्री शास्त्री जी के मुख से भागवत कथा का श्रवण किया तो मुग्ध होकर अपने बड़े भाई से बोले– "भैया जी! देखना किसी दिन अपने श्याम सुन्दर जी विश्वस्तर के व्यास बनेंगे।" श्री त्रिलोकचंद सेठ जी ज्वैलर्स होने के नाते हीरा स्वर्णादि की परख तो रखते ही है किन्तु संत विद्वानों की कृपा से उन्हें व्यासों की भी पारखी दृष्टि प्राप्त हुई क्योंकि उनकी भविष्यवाणी कुछ ही समय में तब सिद्ध होती दिखाई पड़ी जब श्री शास्त्री को वे (सेठ जी) प्रथम बार अपने शहर बरेली में आनंद आश्रम लाये जहाँ श्री शास्त्री जी के प्रवचनों को श्रवण कर श्रोता समुदाय भाक्तिसागर में निमग्न होकर नाच उठा और शनैः शनैः बरेली से ही उनकी वाणी का जादू भारत के अनेक राज्यों में (फैलता) व्याप्त होता चला गया। मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, पंजाब, हिमाचल, प्रदेश, आसाम, हरियाणा, बिहार, महाराष्ट्र, केरल, उड़ीसा, झारखण्ड, बिहार आदि के अनेक महानगरों में आपकी कथा बड़े विशाल श्रोता समुदाय के मध्य सम्पन्न हो चुकी है। आज मात्र ३८ वर्ष की अवस्था में श्री शास्त्री जी ने श्रीमद्भागवत कथा के ५०० पारायण सम्पन्न कर लिये है। अनेक स्थानों से विद्वानों द्वारा श्री शास्त्री जी को विविधि उपाधियाँ भी प्राप्त हुई है। उत्तरकाशी में गंगा के पावन तट पर सम्पन्न हुई श्रीमद्भागवत सप्ताह में शिवानन्द आश्रम ग्राम गणेशपुर के द्वारा आपको 'रसेश' की उपाधि से विभूषित किया गया किन्तु वे

इन उपलब्धियों को प्रभु का दिया प्रसाद समझकर उन्हीं के चरणों का चमत्कार मानते है, इसीलिये उनका जीवन बड़ा ही सरल और सहज है ।

श्री शास्त्री जी बाल्यावस्था से ही श्रीधाम वृन्दावन में आकर रहे तथा श्री बालकृष्ण प्रभु की बाग्डमयस्वरूप श्रीमद्भागवत का प्रवचन भी किया किन्तु उनके अर्न्तमन में मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्री राम के प्रति जो आकर्षण था वही उन्हें अयोध्या लाया और प्रेममूर्ति पंचरसाचार्य श्री रामहर्षण दास जी महाराज के द्वारा उन्होने वैष्णवी दीक्षा ग्रहण की तथा अपनी जन्म भूमि भितरवार में माँ पार्वती के पावन तट पर श्री रामजानकी जी का सुन्दर मंदिर निर्माण कराया जहां प्रायः प्रतिवर्ष एक विशाल धार्मिक आयोजन किया जाता है।

भारत के परम विरक्त संत विद्वानों का श्री शास्त्री जी को विशेष अनुग्रह प्राप्त है जैसे परम वीतराग संत स्वामी श्री विष्णु आश्रम जी महाराज (शुकताल) श्री महन्त नृत्यगोपालदास जी महाराज (अयोध्या), शंकराचार्य श्री स्वामी माधवाश्रम जी महाराज, श्री सीताराम शरण किलाधीश जी (अयोध्या), श्री रामकिंकर जी महाराज, स्वामी विद्यानंद गिरि जी महाराज, पुरी शंकराचार्य श्री निश्चलानंद सरस्वतीजी, देश के महान गायक पं. जसराज जी बक्सर वाले संत श्रीमन् नारायणदास (मामाजी) एवं विश्व संत पूज्य मोरारी बापू ने आपकी कथा की भूरि–भूरि प्रशंसा की एवं आशीर्वाद प्रदान किया। श्री शास्त्री जी इसी आशीष को अपने जीवन का कवच मानते है।

आपने अपने देश के अलावा विदेशों में भी धर्म ध्वजा को लहराया। गत वर्ष थाईलैण्ड की राजधानी बैकांक में आपकी वाणी से हिन्दू समाज लाभान्वित हुआ एवं कथा की भरपूर प्रशंसा की गई।

३८ वर्ष की अल्पायु में श्री शास्त्री जी के अंदर जो प्रतिभा दृष्टिगोचर होती है वह निःसंदेह परिश्रम साध्य नहीं, कृपासाध्य ही है जिसे वे स्वतः पग–पग पर स्वीकार करते है। श्री शास्त्री द्वारा भगवत कथा की भागीरथी में डूबकर गाये हुए भजनों का श्रवण कर श्रोतागण देह–गेह का विस्मरण कर भक्ति रस धारा में निमग्न हो नाच उठते है, उन भक्तों की विशेष मांग पर अपने भजनों का संकलन कर (पुस्तकबद्ध करके) छापने का दायित्व श्री शास्त्री ने मुझे प्रदान किया जो मेरा सौभाग्य है। आज "भजनामृत" के रूप वही संकलन आपके हाथ में है मुझे आशा है इस भजन–अमृत का पान कर आप अपने जीवन का भव ताप दूर करेंगे और भगवत चरणों से जुड़कर भागवती यात्रा मंगलमयी बनावेंगे।

संपादक

आशीर्वचन

हे श्री श्याम सुन्दर जी नाम की व्याख्या

हे — हे श्याम सुन्दर गुरोः शुभ नाम ध्येयः
राधाः पतेः शुभद विग्रह तत्वभिज्ञः।
श्री कृष्ण गीत ममलं गदितुं सशक्तः
श्यामस्य सर्वगुण सुन्दर भक्त सन्तः ।।१।।

श्री — श्री श्यामसुन्दर मुखान्मधुरां कथां तु
श्रुत्वाऽनुभूतमधिकं हृदयंगमं च।
कृत्वा सुशास्त्र मिदमेव सुनिश्चतेऽस्मि
धन्यो भवान् विदितमेव समस्त लोके।।२।।

श्या — श्यामे सुभक्तिरधिका यदि भक्त चित्ते
किं तत्र दुर्लभ महो भवतीह लोके।
पौराणिको भवति चेज्जगती तलेअस्मिन्
तस्यैव कृष्ण चरणस्य दया प्रसादात् ।।३।।

म — मध्ये प्रवाहयति या यमुना सुमाता
वृन्दावने भवति यत्र मुकुन्द नित्यम्।
ज्ञानार्थमत्र भवता सह संगतिर्मे
राधापतेः सुदयया शुभ चाशिषा च ।।४।।

सुं — सुन्योहमस्मि जगतीतल मध्य जीव,
तथापि भक्ति रहितः त्वविवेक युक्तः।
वृन्दावन विरितमस्ति समस्त भूमौ
इत्थं विचिन्त्य भवतां तु निवेदियामि ।।५।।

द — दक्षो जनो पतति नैव भवाब्धि मध्ये
तत्रापि विप्रकुलमस्तितु धन्यमेतत्।
तथापि शास्त्रममलं गुरू सेव कश्च
नैवास्ति दुर्लभमहो भवतां सुभूमौ।।६।।

र — रक्षन्तु देव पितरः सततं भवन्तं
विद्वजनस्य शुभ भूषण भूषयन्तम्।
आशीर्वचः प्रति फलन्तु सुछात्रहेतोः
छात्राः भवन्तु गुणिनोहि समस्त लोके ।।७।।

जी — जीवो न जीवति सुखेन विमूढ़ चित्तः
पूर्वार्जितं फलति जीवन यापनार्थम्।
दीनोऽहमस्मि सततं हृदिनानुभूतिः
सौख्यां कथं भगवतः चरणार विन्दात् ।।८।।

विद्वानों द्वारा पूज्य शास्त्री जी को दिये गये आशीर्वचन

नमामि श्याम सुन्दरं द्विजातकं शिरोमणिम् ।
कथा सुधा प्रसारकं समस्त शास्त्रवेदिनम् ।।

पुराण वाचकं द्विजं समस्त भक्त वन्दिनम।
वरिष्ठ शब्द भाषकं प्रगल्भता प्रकाशकम् ।२।।

प्रसन्न वक्त्र सज्जनं विशाल भाल मण्डितम्।
चरित्र भूषितं वरं विशुद्ध संस्कृताधिपम् ।।३।।

विशुद्ध ज्ञान बोधकं सुचारू कार्य साधकम्।
सामगान गायकं वरं प्रसिद्ध पण्डितम्।।४।।

शुभाशिषां शुभेच्छुक कुमार कृष्ण गौतम।
अभिनन्दये शतं मुदा गीर्वाण गिरा भारकम्।।५।।

श्रीकृष्ण कुमार गौतम
ज्वालापुर-हरिद्वार
पौष कृष्णद्वादशी गुरुवार सं. २०५८ दिनांक १०.१.२००२

मंगलाचरण

ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्ट दोहं,
तीर्थास्पदं शिवविरिंचिनुतं शरण्यम्।
भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धिपोतं,
वन्दे महापुरूष ते चरणारविन्दम्।।१।।

त्यक्त्वा सुदुस्त्यज सुरेप्सित राज्यलक्ष्मीं
धर्मिष्ठ आर्यवचसा यदगादरण्यम् ।
मायामृगं दयितयेप्सितमन्वधावद्,
वन्दे महापुरूषते चरणारविन्दम्।।२।।

वंशी विभूषित करान्नवनीरदाभात्
पीताम्बरा दरुणबिम्बफलाधरोष्ठात्।
पूर्णेन्दु सुन्दर मुखादर विन्दनेत्रात्
कृष्णात् परं किमपि तत्त्वमहं न जाने।।३।।

सीतानाथ समारम्भां, रामानंदार्य मध्यमाम् ।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरूपरम्पराम् ।।४।।

कृष्ण! त्वदीयपद पंकज पंजरान्ते,
अद्यैव मे विसतु मानस राजहंस।
प्राण प्रयाण समये कफवातपित्तैः
कण्ठावरोधन विधौ स्मरणं कुतस्ते।।५।।

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्।।६।।

गौराङ्ग रसमयं नित्यं, रसाचार्यं रसोत्सुखं ।
श्री रामहर्षण देवाख्यं सदगुरूं प्रणमाम्यहम् ।।७।।

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानांजन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।८।।

जय जय श्रीराधारमण जय-जय नवल किशोर।
जय गोपी चितचोर प्रभु, जय जय माखन चोर।।९।।

गोपीगीत

जयति तेऽधिकं जन्मना व्रजः श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि।
दयित दृश्यतां दिक्षु तावकास्त्वयिधृतासवस्त्वां विचिन्वते ।।1।।

– शरदुदाशये साधुजातसत सरसिजोदर श्री मुषा दृषा ।
सुरतनाथ तेऽशुल्क दासिका वरदनिघ्नतो नेह किं वधः ।।2।।

– विषजलाप्ययाद व्यालराक्षसाद् वर्ष मारूताद् वैद्युतानलात् ।
वृषमयात्मजाद् विश्वतोभयाद्,ऋषभ ते वयं,रक्षिता मुहुः ।।3।।

– न खलु गोपिका,नन्दनोभवान्,अखिल देहिनामन्तरात्मदृक्।
विखनसार्थि तो,विश्वगुप्तये,सख उदेयिवान् सात्वतां कुले ।।4।।

– विरचिताभयं वृष्णिधुर्य ते,चरणमीयुषां,संसृतेर्भयात् ।
करसरोरूहं कान्त कामदं,शिरसि धेहि नः श्री करग्रहम् ।।5।।

– व्रजजनार्तिहन् वीरयोषितां,निजजनस्मय ध्वंसनस्मित ।
भज सखे भवत् किङ्करीः,स्मनो जलरूहाननं चारू दर्शय ।।6।।

प्रणतदेहिनां पापकर्शनं,तृणचरानुगं श्री निकेतनम् ।
फणफणार्पितं ते पदाम्बुजं,कृणु कुचेषुनः कृन्धि हृच्छयम् ।।7।।

मधुरयागिरा वल्गुवाक्यया,बुधमनोज्ञया पुष्करेक्षण।
विधिकरीरिमा वीरमुह्यतीरधरसीधुनाऽऽप्याययस्व नः ।।8।।

– तव कथामृतं तप्तजीवनं,कविभिरीडितं कल्मषापहम्।
श्रवणमंगलं श्रीमदाततं भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः ।।9।।

प्रहसितं प्रिय प्रेमवीक्षणं विहरणं च ते ध्यानमंगलम् ।
रहसि संविदो या हृदिस्पृशः कुहक नो मनः क्षोभयन्ति हि ।।10।।

चलसि यद् व्रजाच्चारयन् पशून् नलिनसुन्दरं नाथ ते पदम् ।
शिलतृणांकुरै सीदतीति नः कलिलतां मनः कान्तगच्छति-।।11।।

दिनपरिक्षये नीलकुन्तलै र्वनरूहाननं विभ्रदावृतम्।।
घनरजस्वलं दर्शयन् मुहुर्मनसि नः स्मरं वीर यच्छसि ।।12।।

प्रणतकामदं पद्मजार्चितं धरणिमण्डनं ध्येयमापदि ।
चरण पंकजं शन्तमं च ते रमण नः स्तनेष्वर्पयाधिहन् ।।13।।

सुरतवर्धनं शोकनाशनं स्वरितवेणुना सुष्ठु चुम्बितम् ।
इतररागविस्मारणं नृणां वितर वीर नस्तेऽधरामृतम् ।।14।।

अटति यद् भवानह्नि काननं त्रुटिर्युगायते त्वामपश्यताम् ।
कुटिल कुन्तलं श्रीमुखं च ते जड उदीक्षतां पक्ष्मकृद्दृशाम् ।।15।।

पतिसुतान्वय भ्रातृबान्धवा नतिविलंध्य तेऽन्त्यच्युतागताः ।
गतिविदस्तवोद् गीतमोहिताः कितवयोषितः कस्त्यजेन्निशि ।।16।।

रहसि संविदं हृच्छयोदयं प्रहसिताननं प्रेमबीक्षणम्।
बृहदुरः श्रियो वीक्ष्य धाम ते मुहुरतिस्पृहा मुह्यते मनः ।।17।।

वृजवनौकसां व्यक्तिरंग ते वृजिनहन्त्र्यलम् विश्वमंगलम्।
त्यजमनाक् च नस्त्वत्स्पृहात्मनां स्वजनहृद्रुजां यन्निषूदनम्।।18।।

यत्ते सुजातचरणाम्बुरूहं स्तनेषु भीताः शनैः प्रिय दधीमहि कर्कशेषु।
तेनाटवीमटसि तद्व्यथतेन किंस्वित् कूर्पादिभिर्भ्रमतिधीर्भवदायुषां नः ।।19।।

।। श्री शुक उवाच ।।

इति गोप्यः प्रगायन्त्यः प्रलपन्त्यश्च चित्रधा।।
रूरूदुः सुस्वरं राजन् कृष्णदर्शनलालसाः ।।20।।

तासामाविरभूच्छौरिः स्मयमानमुखाम्बुजः ।
पीताम्बरधरः स्रग्वी साक्षान्मन्मथमन्मथः।।21।।

मधुराष्टक

अधरं मधुरं, वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।1।।

वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं बलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।2।।

वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।3।।

गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।4।।

करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरम्।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।5।।

गुंजा मधुरा माला मधुरा, यमुना मधुरा बीची मधुरा।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।6।।

गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं मुक्तं मधुरम्।
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।7।।

गोपा मधुरा गावो मधिुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।8।।

श्रीकृष्णाष्टकम्

भजे ब्रजैकमण्डनं समस्तपापखण्डनम्,
स्वभक्तचित्तरंजनं सदैव नन्दनन्दनम्।
सुपिच्छगुच्छमस्तकं सुनादवेणु हस्तकम्,
अनंगरंगसागरं नमामि कृष्णनागरम्।।1।।

मनोजगर्वमोचनं विशाललोललोचनम्,
विधूतगोपशोचनं नमामि पद्मलोचनम्।
करारविंदभूधरं स्मितावलोकसुन्दरम्,
महेन्द्रमानदारणं नमामि कृष्णवारणम्।।2।।

कदम्बपुष्पकुण्डलं सुचारूगण्डमण्डलम्,
ब्रजांगनैकवल्लभं नमामि कृष्णदुर्लभम्।
यशोदया समोदया सगोपया सनन्दया,
युतंसुखैकदायकं नमामि गोपनायकम्।।3।।

सदैव पादपंकजं मदीयमानसे निजम्,
दधानुमुत्तमालकं नमामि नन्दबालकम्।
समस्तदोषशोषणं समस्तलोकपोषणम्,
समस्त गोपमानसं नमामि नन्दलालसम्।।4।।

भुवो भरावतारकं भवाब्धिकर्णधारकम्,
यशोमती किशोरकं नमामि चित्तचोरकम्।
दृगन्तकान्तभंगिणं सदासदालिसंगनम्,
दिने दिने नवं नवं नमामि नन्दसम्भवम्।।5।।

गुणाकरं सुखाकरं कृपाकरं कृपापरम्,
सुरद्विषन्निकंन्दनं नमामि गोपनन्दनम्।
नवीनगोपनागरं नवीनकेलिलम्पटम्,
नमामि मेघसुन्दरं तडित्प्रभालसत्पटम्।।6।।

समस्तगोपनन्दनं हृदम्बुजैकमोदनम्,
नमामि कुंजमध्यगंप्रसन्नमानशोभनम्।
निकामकामदायकं दृगन्तचारूसायकम्,
रसालवेणु गायकं नमामि कुंजनायकम्।।7।।

विदग्धगोपिकामनोमनोज्ञतल्पशायिनम्,
नमामि कुंजकानने प्रवृद्धवन्हिपायिनम्।
किशोर कान्ति रंजितंदृग्जनं सुशोभितम्,
गजेन्द्र मोक्षकारणं नमामि श्रीविहारिणम्।।8।।

यदा तदा यथा तथा सदैव कृष्णसत्कथा,
मया सदैव गीयतां तथा कृपा विधीयताम्।
प्रमाणिकाष्टकद्वयं जपत्यधीत्य यः पुमान्,
भवेत्स नन्दनन्दने भवे भवे सुभक्तिमान्।।9।।

शिव स्तुति

ॐ शिव ॐ शिव परात्परा शिव ऊँकारा शिव तव शरणम्।
हे शिव शंकर भवानी शंकर, उमा महेश्वर तब शरणम्।।

हे वृषभध्वज हे धर्मध्वज, साम्बसदा शिव तब शरणम्।
हे जगदीश्वर पिनाकपाणि, त्रिनयन शंकर तब शरणम्।।

हे शशि शेखर शम्भु शिवाप्रिय शिवगंगाधर तब शरणम्।
त्रिशूलपाणि सोम शिवाप्रिय, शिव शिपिविष्टं तब शरणम्।।

हे मृत्युंजय पशुपति शंकर, भुजंग भूषण तब शरणम्।
हे अविनाशी कैलाश वासी, पार्वती पति तब शरणम्।।

श्री राम स्तुति
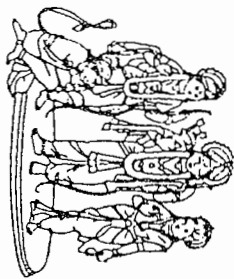
श्री रामचन्द्र कृपालु, भजुमन हरण भवभय दारूणम्।
नवकंज लोचन, कंज–मुख, करकंज पद कंजारूणम्।।

कंदर्प अगणित अमित छवि, नवनील–नीरज सुंदरम्।
पट पीत मानहु तड़ित रूचि शुचि नौमि जनक सुतावरम्।।

भजु दीन बंधु दिनेश दानव दैत्यवंश निकंदनम्।
रघुनंद आनंदकंद कौशलचंद दशरथ नंदनम्।।

सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारू उदारू अंग विभूषणम्।
आजानुभुज शर–चाप धर, संग्राम–जित–खरदूषणम्।।

इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि–मन–रंजनम्।
मम हृदय–कंज निवास कुरू, कामादि खलदल–गंजनम्।।

मनु जाहिं राचिउ मिलहि सो बरू सहज सुंदर सॉवरो।
करूणा निधान सुजान सील सनेह जानत रावरो।।

एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली।।

।। सियावर रामचन्द्र की जय।।

भये प्रकट कृपाला

भए प्रगट कृपाला दीन दयाला कौशल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप विचारी।।

लोचन अभिरामा तनु घनश्यामा निज आयुध भुजचारी।
भूषण बन माला नयन विसाला सोभासिंधु खरारी।।

कह दुई कर जोरी अस्तुति तोरी केहि विधि करौं अनंता।
माया गुन ग्याना तीत अमाना वेद पुरान भनंता।।

करूना सुख सागर सब गुन आगर जेहिं गावहि श्रुति संता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता।।

ब्रह्माण्ड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै।
मम उरसो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै।।

उपजा जब ग्याना प्रभु मुस्काना चरित बहुत विधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै।।

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
की जै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा।।

सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न
परहिं भवकूपा।।

हे गुरूदेव करूणा सिन्धु

हे मेरे गुरूदेव करूणा सिन्धु करूणा कीजिए।
हूँ अधम आधीन अशरण अब शरण में लीजिए।।

खा रहा गोते हूँ मैं भव, सिन्धु के मझधार में।
आसरा है दूसरा कोई न, इस संसार में।।

मुझमें है जप तप न साधन, और नहीं कुछ ज्ञान है।
निर्लज्जता है एक बाकी, और बस अभिमान है।।

पाप बोझे से लदी नैया, भँवर में आ रही।
नाथ दौड़ो अब बचाओ, जल्द डूबी जा रही।

आप भी यदि छोड़ देंगे, फिर कहाँ जाऊँगा मैं।
जन्म दुःख से नाव कैसे, पार कर पाऊँगा मैं।।

सब जगह "मंजुल" भटक कर, अब शरण ली आपकी।
पार करना या न करना, दोनों मर्जी आपकी।।

हो गये भव से पार

हो गये भव से पार, लेकर नाम तेरा।
बाल्मीकि अतिदीन दुखी था, बुरे कर्म में सदा लीन था।
करी रामायण तैयार लेकर नाम तेरा...
थे नल नील जाति के बानर, राम नाम लिख दिया शिला पर।
हो गई सेना पार लेकर नाम तेरा...
भरी सभा में द्रुपद दुलारी कृष्ण द्वारिकानाथ पुकारी।
बढ़ गया चीर अपार, लेकर नाम तेरा....
गज ने आधा नाम पुकारा, गरूड़ छोड़कर उसे उबारा।
किया ग्राह संघार, लेकर नाम तेरा....
जिनको स्वयं तार नहीं पाये, नाम लिए से मुक्ति पाये।
महिमा नाम अपार लेकर नाम तेरा....
मीरा गिरधर नाम पुकारी, विष अमृत कर दिया मुरारी।
खुल गये चारो द्वार, लेकर नाम तेरा....
राम नाम को जो कोई गावै, अपने तीनों लोक बनावै।
है जीवन का सार, लेकर नाम तेरा....

छोटी छोटी गैंया छोटे–छोटे ग्वाल

छोटी छोटी गैंया छोटे–छोटे ग्वाल।
छोटो सो म्हारो मदन गोपाल।।

आगे आगे गैंया पीछे पीछे ग्वाल।
बीच में म्हारो मदन गोपाल।।

कहा खावै गैंया कहा खावै ग्वाल।
कहा खावै म्हारो मदन गोपाल ।।

घास खावै गैंया दूध पीवे ग्वाल।
माखन खावै म्हारो मदन गोपाल।।

छोटी छोटी सखियाँ मधुवन बाग।
रास रचावै म्हारो मदन गोपाल।।

काली काली गैंया गोरे गोरे ग्वाल।
श्याम वरण म्हारो मदन गोपाल।।

मीठे रस से भरोड़ी

मीठे रस से भरोड़ी राधा रानी लागे।
म्हाने कारो कारो यमुना जी को पानी लागे।।टेक।।

कान्हा जी तो सांवर–सांवर, राधा गोरी–गोरी।
वृन्दावन में धूम मचावे बरसाने की छोरी।।
बृजधाम राधा जू की, रजधानी लागे–2 म्हाने....

कान्हा नित मुरली में टेरें, सुमिरें बारम्बार।
कोटिन रूप धरै मन मोहन तउ न पावें पार ।।
रूप रंग की छबीली, पटरानी लागे–2 म्हाने.....

ना भावे मन माखन मिश्री अब ना कोई मिठाई।
म्हारी जीभड़िया ने भावै, राधा नाम मलाई।
बृषभानु की लली तो, गुड़धानी लागै–2 म्हाने....

राधा–राधा नाम रटत है जे नर आठो याम।
तिनकी बाधा दूर करत हैं राधा राधा नाम।।
राधा नाम में सफल जिंदगानी लागै–2 म्हाने....

पार करेंगे नैया

पार करेंगे नैया, भज कृष्ण कन्हैया।

बाल कृष्ण गोपाल हमारो,
ब्रज वासिन को प्राण पियारो,
नन्द महर कौ छैया, भज कृष्ण कन्हैया।।1।।

ग्वाल बाल संग धैनु चरावै,
लूट लूट दधि माखन खावै।
माखन चोर कन्हैया, भज कृष्ण कन्हैया।।2।।

गोपिन के संग रास रचायो,
कामदेव याने मार भगायो।
कालिय नाग नथैया, भज कृष्ण कन्हैया।।3।

भक्त सुदाना चावल लाये,
प्रेम सहित हरि भोग लगाये।
कहकर भैया भैया, भज कृष्ण कन्हैया।।4।।

मीरा के प्रभु गिरिधर नागर,
सूरश्याम मेरे नटवर नागर।
घट–घट वास करैया, भज कृष्ण कन्हैया।।5।।

कोई कहे गोविन्द

कोई कहे गोविन्द कोई गोपाला।

मैं तो कहूँ सांवरिया वांसुरिया वाला ।।-
गोविन्दा–गोपाला।।

राधा ने श्याम कहा मीरा ने गिरिधर।
कृष्णा ने कृष्ण कहा कुब्जा ने नटवर।।
ग्वालों ने तुमको पुकारा गोपाला ।। मैं तो....

मैया तो कहती है सुन हो कन्हैया।
घनश्याम कहते हैं बलराम भैया।।
सूरा की आँखों के तुम हो उजाला।।मैं तो....

भीष्म जी के बनवारी अर्जुन के मोहन।
छलिया भी कहकर के बोला दुर्योधन।।
कंसा तो कहता है जलकर के काला ।।मैं तो....

अच्युत युधिष्ठिर के ऊधव के माधव।
भक्तों के भगवान संतो के केशव।।
ग्वालिनियां तुमको पुकारे नन्दलाला।।मैं तो....

श्याम तेरी बंशी

श्याम तेरी बंशी बजे धीरे–धीरे।
बजे धीरे–धीरे श्री यमुना के तीरे।।

इत गोकुल उत मथुरा नगरी।
बीच में यमुना बहैं धीरे–धीरे।।श्याम तेरी बंशी....

इत मधु मंगल उत श्री दामा।
बीच में कान्हा चलें धीरे–धीरे।।श्याम तेरी बंशी....

इत में ललिता उत में बिसाखा।
बीच में राधा चलें धीरे–धीरे।।श्याम तेरी बंशी....

इत वृन्दावन उत में मधुवन।
बीच में गैयां चलें धीरे–धीरे।।श्याम तेरी बंशी....

कदम की डारी पे झूला पड़ो है।
राधा और कान्हा झूलैं धीरे–धीरे।।श्याम तेरी बंशी..

मैं जो जपूँ सदा तेरा नाम
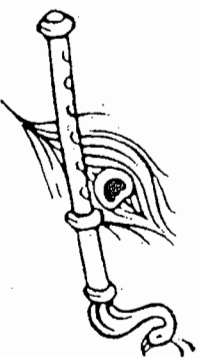
मैं तो जपूँ सदा तेरा नाम दयालू दया करो।

द्वार खड़े है भक्त तुम्हारे, अपनी दया के खोलो द्वारे।
पूरन हों सब काम, दयालू दया करो।।

भजन कीर्तन गाऊँ मैं तेरा, नित उठ नाम ध्याऊँ मैं तेरा।
कृष्ण–कृष्ण श्री राम दयालू दया करो।

साधु संत की संगत देना, नाम अपने की रंगत देना।
दास बनालो घनश्याम, दयालू दया करो।।

मेरे मन की ज्योति जगा दो, मुझको अपना रूप लखा दो।
पहुँचा दो निज धाम, दयालू दया करो।।

राधे राधे बोलो तो आवें बिहारी

राधे–राधे बोलो तो आवेंगे बिहारी।
आवें बिहारी, चलें आवें गिरधारी।।

राधे रानी चन्दा, चकोर है बिहारी।
राधे रानी गंगा, तो धार है बिहारी।।

राधे रानी चम्पा सुवास हैं बिहारी।
राधे रानी मिश्री तो स्वाद है बिहारी।।

राधे रानी सागर, तरंग है बिहारी।
राधे रानी तन हैं तो प्राण है बिहारी।।

राधे रानी लाड़िली तो लाड़ले बिहारी।
राधे रानी मोहिनी तो मोहन बिहारी।।

राधे रानी मोती तो सीप हैं बिहारी।
राधे रानी बाती तो दीप है बिहारी।।

राधे रानी मुरली स्वर तान है बिहारी।
भोली गोपी गावैं तो पावैं बिहारी।।

राधे रानी भोरी तो छलिया बिहारी।
राधे रानी गोरी, तो करिया बिहारी।।

संकट हरैगी करैगी भली

संकट हरैगी करैगी भली, वृषभानु की लली।

राधा श्री राधा श्री राधा रटें।
राधा रटें कोटि बाधा मिटें।
छलिया ने बहुरूप धर के छली, वृषभानु.....

भक्तन कूँ भारी भरोषो रहे,
आवै शरण याकी वैंया गहे।
दुष्टन के दल में करै खलबली, वृषभानु....

त्रिभुवन पती याने बस में किये,
जहाँ पग धरे श्याम नैना दिये।
कीरति तपस्या करी सो फली, वृषभानु....

बरसाने बारी तू मेरी सहाय,
दीनन दया करि, दरश दो दिखाय।
प्यारी जो लागे रंगीली गली, वृषभानु....
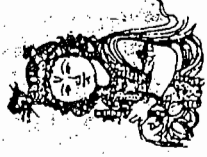
सुन बरसाने वारी

सुन बरसाने वारी गुलाम तेरो बनवारी।

तेरी पायलिया पे बाजे मुरलिया।
छम–छम नाचे गिरधारी।।.......
चन्दा से आनन पे बड़ी–बड़ी अखियां।
लट लटकें घुंघराली।।.......
बड़े–बड़े नैनों पे झीनो झीनो कजरा।
घायल कुँज बिहारी।।......
बड़े–बड़े देव द्वार पे ठाडे।
वाट तकत हैं बिहारी।।........
बरसाने की खोर सांकरी,
मांगत दान बिहारी।।......
कदम की डाली पे झूला पड़ो है, झोटा देवें बिहारी।।

राधे कृष्णा – 3 बोल

राधे कृष्णा राधे कृष्णा राधे कृष्णा बोल।
सब दुःख तेरे दूर भगेंगे अंतर के पट खोल।।
जो इस जग में आया है वो निश्चय जायेगा।
अन्त समय में कोई तेरे, काम न आयेगा।।
झूठे जग से नेह तोड़ के राधे कृष्णा बोल सब दुख....
जब मनमोहन के चरणों में प्रीति लगायेगा।।
जन्म मरण के जग प्रपंच से तू बच जायेगा।
सार यही है इस जीवन का राधे कृष्णा बोल सब दुख..
ममतामयी श्री राधे रानी कृपा दिखायेंगी।
जगतारन को हरपल तेरी याद दिलायेंगी।।
मुक्ति मिल जायेगी बन्दे राधे कृष्णा बोल सब दुख....

राधा मेरी कंचन गोरी

राधा मेरी कंचन गोरी रे।
नन्दगाँव का कुँवर कन्हैया, है वो कारो–कारो । राधा मेरी
नन्द गाँव का कुँवर कन्हैया, गाय चरावन वारौ। ग्वारिया गंवारो
राधा मेरी महलन वारी रे। श्री राधे मेरी....
नन्द गाँव का कुंवर कन्हैया ओढ़े कामर कारी।
राधा ओढ़े सुनर चूंदरी रे।
नन्द गाँव का कुँवर कन्हैया बांस बांसुरी वारो।
राधा मेरी वीणा वादिनी रे,
नन्दगाँव का कुँवर कन्हैया, नन्द गोप को बारो।
श्री राधा मेरी राज दुलारी रे।

कारो कारो रे कन्हैया

कारो कारो रे कन्हैया तेरी राधा गोरी गोरी।
मतवारो रे कन्हैया, तेरी राधा गोरी गोरी।।

तू है छैल छबीली तेरी मतवारी है चाल।
काली काली अलकें तेरी लाल लाल है गाल ।।

देखूँ राह तिहारी अब तू आजा चोरी चोरी।
तू है नटवर नागर छोटो बलदाऊ को भैया।।

नन्द को लाल कहावे तू, यसुदा थारी मैया।
सुनके बाँसुरी तिहारी, मै तो आ गई दौड़ी दौड़ी।।

मैं तो भई बाबरी जबसे देखी तेरी सूरत।
अन्दर जाऊँ बाहर आऊँ मन में बसी ये मूरत।।
'राघवदास' जपे है तेरो नाम चोरी चोरी।।

मतवारी याकी चाल

मतवारी याकी चाल मेरो यशोदा को लाल।
याके घूंघर वाले, बाल मेरो यशोदा को लाल।
चले टेड़ी मेड़ी चाल, मेरो यशोदा को लाल।
पहिने गले गुंज माल, मेरो यशोदा को लाल।
याके होंठ लाल लाल, मेरो यशोदा को लाल।
याके नयन विशाल, मेरो यशोदा को लाल।।
पहिने कुंडल विशाल, मेरो यशोदा को लाल।
मेरो नन्दजी को लाल, मेरो मदन गोपाल।।

बृज के नन्दलाला

बृज के नन्दलाला राधा जी के सांवरिया,
सब दुख दूर हुए जब तेरा नाम लिया।

मीरा पुकारे तुम्हे, गिरधर गोपाला,
बन गया अंमृतमय विष का भरा प्याला।
कौन मिटाये उसे जिसे तूने राख लिया।।सब.....

जब तेरे गोकुल में, आई विपदा भारी,
एक इशारे पे, सारी विपदा टारी।
मुड़ गयागोवर्धन जिसे तूने उठा लिया।।सब...

नैनों में श्याम बसे मन में बनवारी,
सुध विसराय गई मुरली की धुन प्यारी।
मेरे मन मन्दिर में रास–रचाओ रसिया।।सब....

देख रहे हो तुम मेरे दुखड़े सारे,
कब दर्शन दोगे मेरी आँखों के तारे।
अधर पे मुरली है कांधे पे कांवरिया।।सब..

सरस किशोरी

सरस किशोरी वयसि किथोरी रति रसवोरी।

कीजै कृपा की कोर, श्री राधे।

साधन हीन, दीन मैं राधे, तुम करूणामय प्रेम अगाधे।

काके द्वारे जाय पुकारे कौन निहारे दीन दुखी की ओर।।

श्री राधे कीजै कृपा की कोर..........

करत अघन नहिं, नेक अघाऊँ, भजन करन में न मन को लगाऊँ।

करि वर जोरी रखि मम ओरी, तुम बिन मोरी कौन सुधारे डोर।।

श्री राधे कीजै कृपा की कोर..........

गोपी प्रेम की भिक्षा दीजै, कैसेहु मोहि अपनो कर लीजै।

तोर गुण गावत, दिवस बितावत, दृग बरसावत है हों प्रेम विभोर।।

श्री राधे कीजै कृपा की कोर..........

मेरा गोपाल गिरधारी

मेरा गोपाल गिरधारी जमाने से निराला है।
रंगीला है रसीला है न गोरा है न काला है।

कभी सपनों में आ जाना, कभी रूपोस हो जाना।
ये तरसाने का मोहन ने निराला ढंग निकाला है।।मेरा.....

कभी ऊखल में बंध जाना, कभी ग्वालों में जा खेले।
तुम्हारी बाल लीला ने अजब धोखे में डाला है। मेरा......

कभी बो मुस्कुराता है, कभी वो रूठ जाता है।
इसी दर्शन के खातिर तो बड़े नाजों से पाला है।।मेरा.....

तुम्हें मैं भूलना चाहूं मगर भूला नहीं जाता।
तुम्हारी साँवरी सूरत ने कुछ जादू सा डाला है।। मेरा.....

मेरे नयनों मे बस जाओ मेरे हृदय में आ जाओ।
मेरे मोहन ये मन मन्दिर तुम्हारा देखा भाला है। मेरा....

तुम्हें मुझसे हजारों है, मगर मेरे तुम्हीं तुम हो।
तुम्हीं सोचो हमारी तो न कोई सुनने वाला है।। मेरा....

मदन मोहन श्री राधा रमण "बेकल" से रूठे है।
बड़ा अच्छा किया है खूब प्रण भक्तों का टाला है।। मेरा.
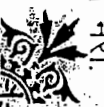
कन्हैया–कन्हैया पुकारा करेंगे

कन्हैया कन्हैया पुकारा करेंगे।
लताओं में बृज की गुजारा करेंगे।।
कहीं तो मिलेंगे बो बांके बिहारी।
उन्हीं के चरण चित लगाया करेंगे।।
बना करके हृदय में, हम प्रेम मन्दिर।
वहीं उनको झूला झुलाया करेंगे।।
जो रूठेंगे हमसे वो बांके बिहारी।
चरण पड़ उन्हें हम मनाया करेंगे।।
उन्हें प्रेम डोरी से हम बाँध लेंगे।
तो फिर वो कहाँ भाग जाया करेंगे।।
उन्होंने नचाये थे ब्रह्माण्ड सारे।
मगर अब उन्हें हम नचाया करेंगे।।
भजेंगे जहाँ प्रेम से नन्द नन्दन।
वहीं श्याम बंशी बजाया करेंगे।।

राधे तेरे चरणों की धूल

राधे तेरे चरणों की, गर धूल जो मिल जाये।
सच कहता हूँ मेरी, तकदीर बदल जाये।।
सुनते है तेरी रहमत दिन रात बरसती है।
एक बूँद जो मिल जाए, दिल की कली खिल जाये।।राधे...
ये मन बड़ा चंचल है कैसे तेरा भजन करूँ।
जितना इसे समझाऊँ उतना ही मचल जाये।। राधे...
नजरों से गिराना ना, चाहे जितनी सजा देना।
नजरों से जो गिर जाये मुश्किल ही सम्हल पाये।। राधे....
राधे मेरे जीवन की बस एक तमन्ना है।
तुम सामने हो मेरे मेरा दम ही निकल जाये।। राधे...

छोटी सी किशोरी

इक छोटी सी किशोरी नित मेरे घर आवे रे
मै तो राधे–राधे गाऊँ वह तो श्याम–श्याम गावे रे।।टेक।।
मैंने वासे पूँछी लाली कहा तेरो नाम रे।
श्याम की चकोरी राधारानी मेरो नाम रे।।
मैंने वासे पूछ्यो लाली कौन भरतार रे।
हँस हँस बोली, माखन चोरों का सरदार रे।।
मैंने वासे पूछ्यो लाली कहा बाको नाम रे।
तनिक लजा के बोली श्याम सुन्दर नाम रे।।
मैंने बासे बोल्यो लाली सुन्दर नाहीं कारो है।
छमक के वह बोली तीनों लोकों को उजियारो है।।

मैंने रटना लगायी रे

मैने रटना लगाई रे, राधे तेरे नाम की।

मेरी पलको पे राधा, मेरी अलकों पे राधा।
मैने मांग भराई रे, राधे तेरे नाम की।।
मेरे नयनों में राधा, मेरे बेनों में राधा।
मैंने मेंहदी रचाई रे राधे तेरे नाम की।।
मेरी चुनरी में राधा, मेरी दुलरी में राधा।
मैंने नथनी सजाई रे, राधे तेरे नाम की।।
मेरे अंग–अंग में राधा, मेरे संग–संग में राधा।
कान्हा वंशी बजाई रे, राधे तेरे नाम की।।4।।

मैंने मेंहदी रचाई रे

मैंने मेंहदी रचाई रे कृष्ण नाम की।
मैंने बिंदिया सजाई रे कृष्ण नाम की।।

मेरी चूड़ियो पे कृष्ण मेरी चुनरी पे कृष्ण।
मैंने नथनी सजाई रे कृष्ण नाम की।।

मेरे नयनों में गोकुल वृन्दावन।
मेरे प्राणों में मोहन, मन भावन।।

मेरे होंठो पे कृष्ण, मेरे हृदय में कृष्ण।
मैंने ज्योति जलाई रे कृष्ण नाम की।।

अब छाया है कृष्ण मेरे अंग—अंग में।
मेरा तन मन रंगा है उसी के रंग में।।

मेरा प्रीतम है कृष्ण मेरा जीवन है कृष्ण।
मैंने माला बनाई रे कृष्ण नाम की।।

राधिका के नुपूर बाजे
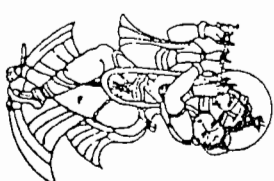
राधिका के नूपुर बाजे। बंशी बाजे श्याम की।।
द्वार द्वार हेर रही श्याम—श्याम टेर रही।
झनन झनन नुपरों की मधुर स्वर बिखेर रही।।
श्याम नृत्य में विभोर, सुध नहीं विराम की।।बंशी...

मचल रही लहर लहर, मोद, मुदित डगर डगर।
डाल डाल पर प्रसून, डोल रहे लहर—लहर।
नाच रही यमुना कूल, गोपी बृजधाम की। बंशी...

पात पात पे सुताल, कुंज कुंज है निहाल।
थिरक रहे वीथियों में, डाल डाल पर रसाल।।
कण्ठ—कण्ठ गूँज रही रागिनी ललाम की।। बंशी....
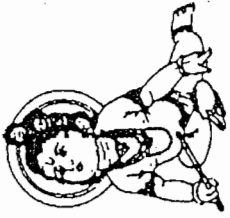
विरज में खेलत श्याम

विरज में खेलत श्याम कन्हाई,
ग्वाल बाल संग गलियन गलियन, कान्हा धूम मचाई।
पनघट पनघट नटखट छलिया, गगरी जल ढुर कावै।
बेणु बजावत नाचत गावत वन वन धेनु चरावे।
निडर नडर माने नन्द नन्दन, करत फिरत लरकाई।।विरज....

ग्वालिनियां संग करत ठिठोली, डगर चलत इतरावै।
छीन झपट दधि माखन खावत, नेकुंना कान्ह लजावै।।
धन्य तेरो बालक नन्द रानी, अब बृज रहो न जाई।। विरज...

वृज बीथिन में हेरत टेरत, लोक लाज विसराई।
नैन नचावै कहि कछु हंसि हंसि, तन मन सुध बिसराई।।
नन्द किशोर–किशोरी राधा, शोभा बरनि न जाई।। विरज...
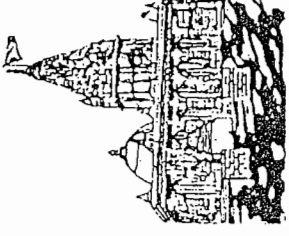
चलो जी श्री वृन्दावन धाम

चलो जी श्री वृन्दावन धाम, रटेंगे राधेजू को नाम।
बसें जहाँ कृष्ण मुरारी, ओढ़ के कामर कारी।।

प्रात होत हम श्री यमुना जी जायेंगे।
परिकम्मा दे जीवन सफल बनायेंगे।।
होय सब मन के पूरन काम, रटेंगे राधे जू...

सिर्फ साल में होय एक दिन मंगला है।
बनें नित नये तेरे फूल के बंगला है।।
अरे क्यूं भटके खामा खाम, रटेंगे राधे जू....

दूर दूर से नर नारी सब आते हैं।
अक्षय तीज को दरश चरण के पाते है।
करे सब मन के पूरन काम, रटेंगे राधे जू....

वृन्दावन धाम अपार

वृन्दावन धाम अपार, रटे जा राधे राधे।
रटे जा राधे राधे भजे जा राधे राधे।।

वृन्दावन गलियाँ डोले श्री राधे राधे बोले।
बाको जनम सफल हो जाये, रटे जा राधे राधे।। वृन्दा...

या बृज की रज सुन्दर है, देवन कूँ भी दुर्लभ है।
अरे या बृज रज शीश चढ़ाय, रटे जा राधे राधे।। वृन्दा...

मोहन की प्यारी राधे वृषभान दुलारी राधे।
लीन्यों बरसाने अवतार रटे जा राधे राधे।। वृन्दा...

जो राधे राधे रटतो, दुःख जनम जनम कौ कटतो।
तेरो बेड़ौ होय जाय पार, रटे जा राधे राधे।। वृन्दा...

तू या जग में चलो आयो तेने राधे नाम न गायो।
तेरे जीवन कूँ धिक्कार, रटे जा राधे राधे।। वृन्दा...

वृन्दावन रास रचायो शिव गोपी भेष बनायो।
सब देवन कियो विचार, रटे जा राधे–राधे।। वृन्दा...

जो राधा जनम न हो तो, रसराज विचारो रोतो।
होतो न कृष्ण अवतार, रटे जा राधे राधे।। वृन्दा...

वृन्दावन में है रई जै जै कार

वृन्दावन में है रई जै–जैकार, जै श्री राधे–राधे,
छाई है खुशियां अपार...... जै श्री राधे–राधे।
सुर नर मुनि हरषावै, ब्रह्मादिक ध्यान लगावै।
चरणों में जाऊँ बलिहार...... जै श्री राधे........
गोपिन संग रास रचावें, बंशी की तान सुनावे।
भागी छोड़ गोपी घर द्वार..... जै श्री राधे......
ग्वालन कूँ संग ले जावें, घर–घर नवनीत चुरावें।
छाई है अजब बहार, जै श्री राधे–राधे.....
मुक्ति भी मुक्ति माँगे, हाथ जोर ठाड़ी आगे।
राधे के चरण निहार........ जै श्री राधे......

ये छलिया नन्द किशोर

ये छलिया नंद किशोर प्रेम की वंशी मधुर बजाय रहो
ये तो, हम पे जादू डार रहो.....
वंशी बाजी वंशीवट पे, ग्वाला पहुँचे यमुना तट पे।
सब सखियाँ पहुँच गई, पनघट पे।
उनके संग रास रचाय रह्यो, ये तो हम पे...
वृन्दावन धाम बिहारी को, बरसानो राधा प्यारी को।
दर्शन होय्र कृष्ण मुरारी को देखन कूँ मन ललचाय रह्यो।...
तैरी लीला अद्भुत न्यारी है, मोहन तू बड़ो खिलाड़ी है।
तेरी सूरत सबसे न्यारी है, नैनन ते नैंन मिलाय रह्यो।....
वरसाने जाय खेली होरी, कोरे कलशन केशर घोरी।
फिर करन लगो है वरजोरी, देख श्यामलाल हरषाय रह्यो।

प्रेम नगर की डगर कठिन है

प्रेम नगर की डगर है कठिन रे,
बटोही न करना बसेरा।
पग बड़ा हो न जाये अंधेरा।।टेक।।

यह तन है टूटी नंवरिया रे प्राणी,
इसमें भरने न पाये ये पापों का पानी।।
नादान केवट सम्हल के चलो
मीत माया भँवर में तू घेरा।।
पग बड़ा.....

मन का रतन रख जतन से अनाढ़ी,
यहां आगे चोरों की बस्ती है भारी।।
ज्ञानी थके रे गुमानी यहां पलभर में।
लुट जाये लाखों का बेड़ा।।
पग बड़ा....

बादल विपद की अँधेरी हैं रातें,
भजन सार सब झूठी दुनियां की बातें।
लखों श्याम पुतरिन में उसकी झलक
मित्र हो जाय पल में सवेरा।।
पग बड़ा हो न जाये अँधेरा पग.....

दूर नगरी

कैसे आऊँ रे कन्हाई तेरी गोकुल नगरी
वड़ी दूर नगरी

जमुना जल जाऊँ तो कान्हा, पायल मोरी बाजै।
झपट चलूं तो मोरी छलके गगरी।। वड़ी दूर नगरी.....

किनारे चलूँ तो कान्हा पायल मोरी भीजे।
बीच में चलूँ तो बह जाऊँ सगरी ।। वड़ी दूर नगरी......

रात को आऊँ तो कान्हा डर मोहे लागे।
दिन में आऊँ तो देखे सारी नगरी।। बड़ी दूर नगरी.....

तेरी नगरी में लाला चोर बसत है।
लूट लैवें मोरी नथ दुलरी।। वड़ी दूर नगरी......

इत मथुरा उत गोकुल नगरी।
बीच मे जमुना जी बहैं गहरी।। बड़ी दूर नगरी.....

"मीरा" बाई गावैं गिरधर के गुण।
तुमरे दरश बिन मैं तो हो गई बावरी।। बड़ी दूर नगरी...

बोल हरी-हरी बोल

बोल हरी बोल हरी, हरी हरी बोल।
केशव माधव गोविन्द बोल।।

नाम प्रभु का है सुखकारी, पाप कटेंगे क्षण में भारी।
नाम का पीले अंमृत घोल, बोल हरी 2.........

शबरी अहिल्या सदन कसाई, नाम जपन से मुक्ति पाई।
नाम की महिमा है बेमोल, बोल हरी 2......

राम नाम के सब अधिकारी, बालक वृद्ध युवा नर नारी।
हरि जप इत उत कितहुँ न डोल, बोल हरी 2......

रट ले मन तू आठों याम, राम नाम में लगे न दाम।
जनम गंवाता क्यों अनमोल, बोल हरी 2.......

राम भजन बिन मुक्त न होवे, हीरा जनम तू व्यर्थ ही खोवे।
राम रसायन पीले घोल, बोल हरी 2.........

लख चौरासी में भरमाया, मुश्किल से यह नर तन पाया।
मूरख अन्धे नैना खोल, बोल हरी 2.........

जो चाहै भव सागर तरना, मिट जाये यह जीना मरना।
पाप की गठरी सिर से खोल, बोल हरी 2.........

राधे कृष्ण श्याम बिहारी, गोपी बल्लभ गिरवरधारी।
मोहन नटवर नागर, बोल हरी 2.........

प्राणी है तू भोला भाला, माया का है खेल निराला।
खुल जायेगी तेरी पोल, बोल हरी 2........

हरि बिन बीतत उम्र ये सारी, फिर आयेगी काल की बारी।
प्रभु पद तू भज ले अनमोल, बोल हरी 2......

हे प्रभु मुझे बता दो

हे प्रभु मुझे बता दो चरणों में कैसे आऊँ।
माया के बन्धनों से अब मुक्ति कैसे पाऊँ।।

न जानू मैं कोई पूजन अज्ञान हूँ मैं भगवन्।
करना कृपा दयालु बन्धन से छूट जाऊँ।।

मैं हूँ पतित स्वामी तुम हो पतित पावन।
अवगुण भरा हृदय ये इसे कैसे मैं दिखाऊँ।।

अच्छा हूँ या बुरा हूँ जैस भी हूँ तुम्हारा।
ठुकराओ न मुझे अब चरणों में सिर झुकाऊँ।।

भगवन इतना कीजे अपनी ही भक्ति दीजै।
हो प्रेम आप में ही तुमको न भूल पाऊँ।।

राधा बोल राधा बोल

राधा बोल राधा बोल – वृन्दावन की गलियन डोल।

श्याम के अंग पीताम्बर सोहे,
राधा के शीष चूनर अनमोल।। वृन्दावन.......

श्याम के शीष पै मुकुट बिराजै,
राधा के शीष भृकुटि अनमोल।। वृन्दावन.....

श्याम के संग में सखा सुशोभित,
राधा के संग सखी करत किलोल। वृन्दावन.....

वृन्दावन की कुंज गलियन में,
बोल हरि बोल हरि हरि हरि बोल।। वृन्दावन........

श्री बांके बिहारी रे

बांके बिहारी रे, दूर करो दुःख मेरा।

सुनाहै जो तेरे दर पे आये।
उसके सब दुखड़े मिट जाये।।
मैं आया शरण तुम्हारी रे दूर करो दुःख मेरा.....

जनम–जनम का मैं हूँ भटका।
बेड़ा आज भँवर में अटका।।
तुम पार करो बनवारी रे दूर करो दुख मेरा.....

शबरी अहिल्या गणिका नारी।
सबही तुमने पार उतारी।।
अब आई हमारी बारी रे दूर करो दुख मेरा.....

मोर मुकुट पीताम्बर धारी।
संग में हो श्री राधा प्यारी।।
मेरे मोहन गिरवरधारी रे दूर करो दुख मेरा.....

बाँके बिहारी प्रभु जय हो तुम्हारी।
जय हो तुम्हारी मैं तो शरण तुम्हारी।।

मोहि आन मिलो घनश्याम

मोहि आन मिलो घनश्याम, बहुत दिन बीत गये।

राधा की अँखियन के तारे, मेरे भी बन जाओ सहारे।
ओ भक्तों के भगवान, बहुत दिन बीत गये।।1।।

मुरली वाले मुरली बजा जा, सोए हुए मेरे भाग्य जगा जा।
ओ मीरा के घनश्याम, बहुत दिन बीत गये।।2।।

नरसी भगत की हुण्डी सिकारी, सांवल साह बनि आए मुरारी।
ओ नरसी के सुन्दर श्याम, बहुत दिन बीत गए।।3।

मन मंदिर में रास रचा जा, रूप सांवला दरस दिखा जा।
जीवन की हो गई शाम, बहुत दिन बीत गए।।4।।

कृष्ण कहने से तर जायेगा

कृष्ण कहने से तर जायेगा, पार भव से उतर जायेगा।
होगी घर घर में चर्चा तेरी,
जिस गली से गुजर जायेगा।।कृष्ण कहने....
बड़ी मुश्किल से नर तन मिला,
क्या पता फिर किधर जायेगा।।कृष्ण कहने...
सब कहेंगे कहानी तेरी,
काम ऐसा जो कर जायेगा।। कृष्ण कहने...
उसके आगे तू झोली फैला,
दाता झोली को भर जायेगा।।कृष्ण कहने...
हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

चले जायेंगे हम बिहारी जी

चले जायेंगे हम बिहारी जी, सुनलो अरज हमारी।
एक दिन हमको बसालोगे प्रभु अपना हमें बनाकर।।
जिस जग में है हमें फसाया उससे हमें छुड़ाकर।।
भूल न जाना, फिर भी बुलाना, इतनी अरज हमारी जी।। चलें...
कहते है तुमको दयालु भगवन, भक्तों के हितकारी।।
अपना हमें बनालोगे क्या, ओ मेरे बाँके बिहारी।
भूल न जाना, फिर भी बुलाना, इतनी अरज हमारी जी।। चले...
सब कुछ हरलो मेरा पर, मेरे मन से कभी न जाना।
एक सहारा तेरा है प्रभु और न कोई ठिकाना।।
भूल न जाना, फिर भी बुलाना, इतनी अरज हमारी जी। चलें....

प्रभु तुम अन्तर्यामी

प्रभु तुम अन्तर्यामी, दया करो दया करो हे स्वामी।

अंग अंग में रंग सांवरो, गहरा होता जाये।
मैं तो बस बिन मोल बिकानी मन में तुम्हें समाये।
लोग करें बदनामी........

मन्द–मन्द मुस्कान मनोहर, मुख पे लट घुंघराली।
अचरज क्या जो भई बावरी, देख के छबि मतवारी।।
बेल सींच दी सारी.....

मैं गुणहीन रिझाऊँ कैसे, तुम को हे नटनागर।
एक यही विश्वास हृदय में, तुम हो दया के सागर।।
तीन लोक के स्वामी.....

माँगा है मैंने श्याम से

माँगा है मैंने श्याम से वरदान एक ही
तेरी कृपा बनी रहे, जब तक है जिन्दगी......

जिस पर प्रभु का हाथ था, वो पार हो गया।
जो भी शरण में आया, उद्धार हो गया।।
जिसका भरोसा श्याम पर, डूबा कभी नहीं...... तेरी कृपा

कोई समझ सका नहीं, माया बड़ी अजीब।
जिसने प्रभु को पा लिया, है वो ही खुश नसीब।
जिसकी इजाजत के बिना, पत्ता हिले नहीं..... तेरी कृपा।।

ऐसे दयालु श्याम से रिश्ता बनाइये।
मिलता रहेगा आपको, जो कुछ भी चाहिए।।
ऐसा करिश्मा होगा, जो हुआ कभी नहीं..... तेरी कृपा

कहते हैं लोग जिंदगी, किस्मत की बात है।
किस्मत बनाना भी मगर, उसके ही हाथ है।
करले यकीन अब मेरा, ज्यादा समय नहीं।।
तेरी कृपा बनी रहे जब तक है जिंदगी....

सुना है तारे हैं तुमने लाखों

सुना है तारे है तुमने लाखों, हमें जो तारो तो हम भी जानें।

निशाचरों को संहारा तुमने, उतारा पृथ्वी का भार तुमने।
हमारे सिर भी है पाप भारी, उन्हें उतारो तो हम भी जानें ।।सुना

हरा अहिल्या का शाम तुमने, मिटाया शबरी का ताप तुमने।
हमारे भी पाप–ताप भगवन, अगर निवारो तो हम भी जानें।।

फँसी भँवर में हमारी नैया, उतारो सागर से हे कन्हैया।
सहारे हम हैं तुम्हारे भगवन, अगर उवारो तो हम भी जाने।।

श्रीकृष्ण गोविन्द हरे

श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेव।

गोपाल मेरी यह प्रार्थना है, भूलूँ नहीं नाम कभी तुम्हारा।
निष्काम होके मैं दिन रात गाऊँ, हे नाथ नारायण वासुदेव।।

माता यशोदा हरि को बुलावें, जागो उठो मोहन नींद खोलो।
गायें रम्हांती तुमको पुकारें, हे नाथ नारायण वासुदेव।।

देहान्त काले तुम सामने हो, मुरली बजाते, मन को लुभाते।
यही गीत गाते मैं निज प्राण त्यागूँ, हे नाथ नारायण वासुदेव।।

जर जाये जिव्हा पापिनी

जर जाये जिव्हा पापिनी राम के बिना।
राम के बिना घनश्याम के बिना।।

क्षत्री आन बिन, विप्र ज्ञान बिन, घर सन्तान बिना।
मोर का यूँ बेकार नाचना है घनश्याम बिना।।
देह प्रांण विन हाथ दान बिन भोजन मान बिना।।

पंछी पंख विन, बिच्छु डंक बिन, आरति शंख बिना।
गणित अंक बिन, कमल पंक विन, निशा मयंक बिना।।
व्यर्थ भ्रमण और चिन्तन भाषण, अच्छे काम बिना।।

त्रिया कंत बिन, मठ महंत बिन, हस्ती दन्त बिना।
ग्राम पंच बिन, रितु वसन्तु बिन, आदी अन्त बिना।
भजन बिना नर ऐसे जैसे अश्व लगाम बिना....

पुष्प बाग बिन, सन्त त्याग बिन, गाना राग बिना।
श्रृंगार सुहाग बिन, शीश पाग बिन, पाना भाग्य बिना।।
तेजा की है बेकार जिन्दगी रघुवर राम बिना....
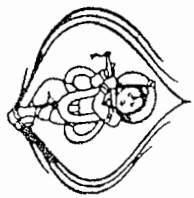
सन्तन के संग लाग रे

सन्तन के संग लाग रे, तेरी अच्छी बनेगी।
अच्छी बनेगी तेरी किस्मत जगेगी।।
होय तेरो बड़ो भाग रे तेरी अच्छी बनेगी।।

सन्तन संग करि पुण्य कमाई,
राम चरण अनुराग रे।। तेरी अच्छी
ध्रुव जी की बन गई, प्रहलाद जी की बन गई।
हरि सुमिरन में ज़ाग रे।। तेरी....
कागा से तोय हंस करैंगे,
मिट जायें उर के दाग रे।। तेरी.....
मोह निशा में बहुत दिन सोये,
जाग सके तो अब जाग रे।।तेरी....
सुत वित नारि तीन आशाऐं,
त्याग सकै तो त्याग रे।।तेरी...
कहत 'कबीर' राम सुमिरन में
पाग सके तो पाग रे।।तेरी......

थाली भर के ल्याई खीचड़ौ

थाली भर के ल्याई खीचड़ो, ऊपर घी की वाट की।
जीमो म्हारा श्याम धणी, जिमावे बेटी जाट की।।टेक।।
बाबा म्हारो गाँव गयो है, ना जाने कब आवैगो।
ऊ के भरोसे बैठ्यो रह्यौ, तो भूखो ही रह जावैगो।।
आज जिमाऊँ तने खीचड़ौ, काल राबड़ी घाट की।।जीमो
बार बार मन्दिर नै जुड़ती, बार बार में खोलती।।
कैंया कोनी जिमरे मोहन, करड़ी–करड़ी बोलती।
ते जीमें तो जद मैं जीमू, मानू न कोई लाट की।।जीमो
भक्ति हो तो करमा जैसी, सांवरियों घर आवेलो।
भक्ति भाव से पूरन हो कर, हरषि हरषि गुण गावेलो।।
साँचो प्रेम प्रभु से हो तो, मूरत बोले काठ की।। जीमो

हरिः शरणम्

हरिः शरणं हरिः शरणं हरिः शरणं हरिः शरणं।
यही इक मन्त्र है, प्यारा, हरिः शरणं हरि शरणं।।
भरे दरबार में जब द्रोपती की लाज जाती थी।
विकल होकर के उच्चारा, हरिः शरणं हरिः शरणम्।।
बचाई लाज द्रोपति की लगाइ चीर की ढेरी।
दुःशासन खींच कर हारा, हरिः शरणम् हरिः शरणम्।।
पिता कीदेख निष्ठुरता नहीं प्रहलाद घबराया।
लगाया प्रेम से नारा, हरिः शरणं हरिः शरणम्।।
पड़ी जब भीर भक्तों पर हुई जब धर्म की हानी।
तभी यह मन्त्र उच्चारा, हरिः शरणं हरिः शरणम्।।
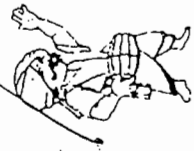
कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो

कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो।
अपनी मुक्ति का साधन बनाते चलो।।

देखना इन्द्रियों के न घोड़े बढ़ैं।
इनमें हरदम ये संयम के कोड़े पड़े।।
अपने रथ को सुमारग लगाते चलो। कृष्ण गोविन्द...

दुख में तड़फो नहीं सुख में फूलों नहीं।
प्राण जाये मगर नाम भूलो नहीं।
मुरली वाले को मन से रिझाते चलो।। कृष्ण गोविन्द...

काम करते चलो नाम जपते चलो।
हर समय कृष्ण का ध्यान धरते चलो।।
काम की वासना को मिटाते चलो।। कृष्ण गोविंन्द...

याद आयेगी हरि को कभी न कभी।
कृष्ण दर्शन तो देंगे कभी न कभी।
ऐसा विश्वास मन को दिलाते चलो। कृष्ण गोविन्द...
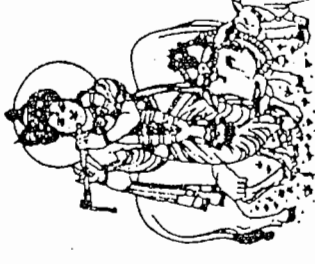
क्या भरोसा है जिन्दगी का

क्या भरोसा है इस जिन्दगी का।
साथ देती नहीं ये किसी का।।

श्वांस रूक जायेगी चलते–चलते।
शमां बुझ जायेगी जलते–जलते।।
दम निकल जायेगा, रोशनी का।।1।।

दुनिया है हकीकत पुरानी।
चलते रूकना है इसकी रवानी।।
फर्ज पूरा करो, वन्दगी का।।2।।

हम रहे ना मुहब्बत रहेगी।
दास्तां अपनी दुनिया कहेगी।
नाम रह जायेगा, आदमी का ।।3।।

वैदेही वलम सो लगन लागी

वैदेही वलम सो लगन लागी।
जब से देखी सांवरी सुरतिया, तब से नैना भये बागी।
कढ़े न बैन बहैं दोऊ नैना, मोरी कुसुम चुनरिया भई दागी।
आचारज गुरूदेव बनायो, करम शुभाशुभ सब त्यागी।।

ऊधौ मन न भये दस बीस

ऊधौ मन न भये दस बीस
एक हुतो सो गयो श्यामसंग, को अवराधै ईश
इन्द्रीं शिथिल भई केशव बिन, ज्यों देही बिन शीश
आसा लगी रहत तन स्वांसा, जीवो कोट बरीश
तुम तौ सखा श्याम सुन्दर के, सकल जोग के ईश
सूरदास वारस की महिमा, जो पूछो जगदीश।

कहन लगे मोहन मैया मैया

कहन लगे मोहन मैया मैया
पिता नन्द सों बाबा बाबा, अरू हलधर सो भइया
ऊँचे चढ़ि–चढ़ि कहत यशोदा, लै–लै नाम कन्हैया
दूर कहूँ जिन जाहु लाल रे, मारेगी काहू कीगइया
गोपी ग्वाल करत कोतूहल, घर–घर लेत बलैया
मणि खंभन प्रतिबिंब विलोकत, नाचत कुंवर कन्हैया
नन्द यशोदा जी के उर ते, इह छवि अनत न जइया
सूरदास प्रभु तुमरे दरश करे, चरनन की बलगैया।

बगिया बिच जान न दैहें

बगिया बिच जान न दैहें, रघुवर विनती सुनो
दल फूल तोड़ हम लैहें, रघुवर विनती सुनो
कोमल चरन कमल बिनु पनही, पखुरी पायन गढ़ि जैहे
तजि–तजि कुसुम मधुप मतवारे, मुख पंकज पे मड़रइहै
चरण छुअत उड़ गई शिला प्रभु, कर छुअत विटप उड़ि जइहैं
सर सोपान सिला पर परसत, प्रभु सब नारी बन जइहैं
जब बोलोगे सिया जू की जै, तब ही प्रभु प्रविसन पइहै
विहंसत बन्धु दोऊ सुन बतियां, 'राजेश' दरश कब पइहै।

भाव के वश में है भगवान

भाव के वश में है भगवान
भाव बिना सब साधन झूठौ, विरथा सकल विधान
भावनहीं तो हर मंदिर में, दीखत बस पाषान
भाव होय तो पाषाणों में, प्रकट होय भगवान
भाव नहीं तो निधिवन मधुवन, लागत सब वीरान
भाव बिना सब सूनो लागत, मंजुल कुंज लतान
कहत रसिक बिन, भाव मिलत नहिं, सपनेहुँ श्यामा श्याम
भाव होय तो जित देखूँ तित, दीखत सुन्दर श्याम
वरसावत रस राज रास रस, करत रसिक नित पान
कुंजन कुंजन डोलत राधा, सुन मुरली की तान।।

मन की तरंग मार लो

मन की तरंग मार लो, बस हो गया भजन।
आदत बुरी सुधारलो, बस हो गया भजन।।
आये हो तुम कहाँ से और जा रहे कहाँ।
मन से सही विचार लो, बस हो गया भजन।।
कोई तुम्हें बुरा कहे, सुनकर करो क्षमा।
वाणी के स्वर सम्हाल लो, बस हो गया भजन।।
नेकी सभी के साथ में, बन जाय तो करों।
मत सिर बदी का भार लो, बस हो गया भजन।।
अनमोल 'ब्रह्मानन्द' को तू खोजता फिरे।
कण–कण में अब निहार लो, बस हो गया भजन।।

मेरा छोटा सा संसार

मेरा छोटा सा संसार हरी आ जाओ एक बार।
मैने ढूँढे सब दरबार।।......
नैया हमारी पार करनी पड़ेगी, लाज हमारी, तुम्हें रखना पड़ेगी।
मेरी विनती बारम्बार।।......
तुम मेरे हो मैं हूँ तेरी, फिर क्यों कीन्ही तुमने देरी।
मेरे जीवन प्राणाधार।।......
तुम्हनें लाखों पापियों को तारा, चरणों से अपने अहिल्या को तारा।
अब सुनलो मेरी पुकार।।......

पैढ़ियाँ पंजाबी यादे पल्ले ठाकुरा बल्ले–बल्ले

पैढ़ियाँ पंजाबी यॉदे पल्ले ठाकुरा बल्ले–बल्ले।
बृज में बैठे रतन सिंहासन, इत्थे बिठावा थल्ले।।
बृज में खाबा माखन मिश्री, तेनूँ इत्थे खवावाँ दही भल्ले।
बृज में तौ थी कितनी गोपियाँ, तेनूँ इत्थे रह गये ठल्ले।
बृज में न्हावाँ यमुना जल में, इत्थे नहवावा टूटी थल्ले।।

कभी राम बनके कभी, श्याम बनके

कभी राम बनके कभी श्याम बनके।
चले आना प्रभु जी चले आना।।
तुम राम रूप में आना, सीता साथ लेके धनुष हाथ लेके।
चले आना प्रभु जी चले आना।।
तुम श्याम रूप में आना, राधा साथ लेके मुरली हाथ लेके।
चले आना प्रभु जी चले आना।।
तुम शिव के रूप में आना, गौरा साथ लेके डमरू हाथ लेके।
चले आना प्रभु जी चले आना।।
तुम विष्णु रूप में आना, लक्ष्मी साथ लेके चक्र हाथ लेके।
चले आना प्रभु जी चले आना।।
तुम गणपति रूप में आना, ऋद्धि हाथ लेके सिद्ध साथ लेके।
चले आना प्रभु जी चले आना।।

रे मन मूरख कब तक जग में

रे मन मूरख कब तक जग में जीवन व्यर्थ गंवायेगा।
राम नाम नहीं गायेगा तो अंत समय पछतायेगा।।
जिस जग में तू आया है वह एक मुसाफिर खाना है।
सिर्फ रात भर रूक कर इसमें सुबह सफर कर जाना है।।
लेकिन यह भी याद रहे श्वासों का मोल खजाना है।
जिसे लूटने को कामादिक चोरों ने प्रण ठाना है।
माल लुटा बैठा तो फिर जाकर क्या मुँह दिखलायेगा।।
राम नाम नहीं गायेगा......

शुद्ध न करी वासना मन की बुद्धि नही निर्मल की है।
झूठी दुनियादारी से क्या आशा मोक्ष के फल की है।।
अब ही कर जो करना है क्यों देर आज और कल की है।
तुझ को क्या है खबर जिन्दगी तेरी कितने पलकी है।।
यम के दूत पकड़ जब लेंगे फिर क्या धर्म करायेगा।।
राम नाम नहीं गायेगा......

पहुँच गुरू के पास ज्ञान के दीपक का उजयाला ले।
कंठी पहिन कंठ में जपकी कर सुमरन की माला ले।।
खाने को दिलदार रूप के रसमय मधुर निबाला ले।
पीने को प्रीतम प्यारे का प्रेम तत्व का प्याला ले।।
पहन किया तो आँखों से आँसू के 'बिन्दु' बहायेगा।।
राम नाम नहीं गायेगा......

तेरी बन जायेगी गोविन्द गुण गाये

तेरी बन जायेगी गोविन्द गुण गाये से।
ध्रुव जी की बन गई प्रहलाद जी की बन गई।
द्रोपदी की बन गई है चीर के बढ़ाये से।
बाली की बन गई सुग्रीव हू की बन गई।
हनुमत की बन गई सिया सुधि लाये से।।
नंद जी की बन गई यशोदा माँ की बन गई।
गोपियन की बन गई है माखन खवाये से।।
गज हू की बन गई और गीध हू की बन गई।
केवट की बन गई है नाव के चढ़ाये से।।
उद्धव की बन गई और भीष्म जी की बन गई।
अर्जुन की बन गई है गीता ज्ञान पाये से।।
तुलसी की बन गई और सूरा की बन गई।
मीरा की बन गई है गिरधर के मनाये से।।

मनहारी का भेष बनाया

मनहारी का भेष बनाया, श्याम चूड़ी बेचने आया।
झोली कांधे धरी उसमे चूड़ी भरीं, गलियों में शोर मचाया।।
राधा ने सुनी ललिता से कही, मोहन को तुरत बुलाया।
चूड़ी लाल नही पहनूँ चूड़ी हरी नहीं पहनूँ, मुझे श्याम रंग है माया।
राधा पहनन लगीं श्याम पहनाने लगे, राधा ने हाथ बढ़ाया।।
राधा कहने लगी तुम हो छलिया बड़े, धीरे से हाथ छुड़ाया।

कानों में कुण्डल गल बैजन्ती

कानों में कुण्डल गज बैजन्ती माला लागे प्यारी।
राधा के मन में बस गये कुन्ज बिहारी।।

श्याम रंग की चूनर ओढ़ी, श्याम रंग की चूड़ियां,
अंग–अंग में श्याम सजायो, मिट गई सारी दूरियां,
शीस पे प्यारो मुकुट विराजे, लट लटके घुंघरारी।।

बैठ कदम की डार कन्हैया, मुरली मधुर बजाये,
सांझ सकारे मुरली के स्वर, राधा राधा गाये,
या मुरली की तान पे जाये सब दुनियां बलिहारी।।

वृन्दावन की गलियन में, कान्हा रास रचाये,
कान्हा रचइया राधा रचना, प्रेम सुधा बरसाये,
एक बार सब मिलके बोलो, जय हो बांके बिहारी।।

कान्हा तेरी जोहत रह गई बाट

कान्हा तोरी जोहत रह गई बाट।
जोहत–जोहत एक पग ठाड़ी, कालिन्दी के घाट।
झूठी प्रीतकरी मनमोहन, या कपटी की बात।।

राधिका गोरी से बिरज की छोरी से

राधिका गोरी से बिरज की छोरी से
मइया करादे मेरो ब्याह।
उमर तेरी छोटी है नजर तेरी खोटी है
कैसे करा दूँ तेरो ब्याह।।

जोनहि ब्याह करायें, तेरी गइयां नाही चराऊँ,
आज के बाद मेरी मइया, तेरी देहली पर नहीं आऊँ।
आयेगा रे मजा अब, जीत हार का।।..............

छोटी सी दुल्हनियां, जब आंगन में डोलेगी,
तेरे सामने मइया, वह घूंघट नहीं खोलेगी।
दाऊ से जा कहो, बैठेंगे द्वार पर।।.........

चन्दन की चौकी पे, मइया तुझको बैठाऊँ,
अपनी प्यारी राधा से, मैं चरण तेरे दबवाऊँ।
भोजन में बनवाऊँगा, छप्पन प्रकार के।।.........

सुन बातें कान्हा की मइया बैठी मुस्काये,
अपने प्यारे कान्हा को, माँ ह्रदय से लगाये।
नजर कहीं लग जाये ना मेरे गोपाल को।।......

भज दसरथ नन्दन जनक लली

भज दसरथ नन्दन जनक लली
राजा दसरथ घर राम जी भये है,
राजा जनक घर भई हैं लली।।
आगे विश्वामित्र महामुनि
पाछे लक्ष्मण अतुल बली।।
ये दोऊ बन्धु जनकपुर आये।
सुमन बिछाऊँ गली–गली।।
तोड़ो धनुष भूप सब हारे।
राजा जनक की भई है भली।।
चार सखी सीता संग आई।
वरमाला पहराय चलीं।।

जानकी नाथ सहाय करें जब

जानकी नाथ सहाय करें जब, कौन बिगाड़ करें नर तेरौ
सूरज मंगल सोम भृगु सुत, बुध अरू गुरू वरदायक तेरौ
राहु केतु की नाहीं गम्यता, संग सनीचर होत है चेरौ।।
दुष्ट दुस्सासन निर्बल द्रोपदी, चीर उतारत केही बल तेरौ,
जाकी सहाय करी करूणा निधि, बढ़ गयो चीर को ढेर घनेरौ।।
जाकी सहाय करें करूणा निधि उनको जग में मान घनेरौ।
रघुवंशी संतन हितकारी 'तुलसीदास' चरणन को चेरौ।।

चदरिया झीनी रे झीनी

चदरिया झीनी रे झीनी,
हे रामनाम रस भीनी।
अष्ट कमल का चरखा बनाया, पांच तत्व की पूनी,
नौ दस माँस बुनत में लागे, मूरख मैली कीन्ही।।
जब मोरी चादर बन घरआई, रंगरेज को दीन्ही।
ऐसा रंग रंगा रंगरेने, लाल लाल कर दीन्हीं।।
चादर ओढ़ शंका मत करियो, ये दो दिन तुमको दीन्हीं।
मूरख लोग भेद नहीं जानैं, दिन–दिन मैली कीन्हीं।।
ध्रुव प्रहलाद सुदामा ने ओढ़ी, सुखदेव ने निर्मल कीन्हीं।
दास 'कबीर' ने यैसी ओढ़ी, ज्योंकी त्यों धर दीन्हीं।।

मैं तो आई वृन्दावन धाम

मैं तो आई वृन्दावन धाम किशोरी तेरे चरणों में।
वृन्दावन की राधा रानी, मुक्ति यहां भरती है पानी
तेरे द्वार पड़े चारो धाम।
कृपा दृष्टि की कोर करो राधे, दीन जनन की ओर ढुरौ राधे
मेरी विनती है बारम्बार।।
बाँके ठाकुर की ठकुरानी, मुक्ति जहां भरती है पानी,
तेरे द्वार पड़े चारो धाम।
कृपा करो न कीजै देरी, लघु सखी चरणन की चेरी,
तेरे चरणों में है विश्राम।।

नन्द के आनंद भयो

नन्द के आनंद भयो, जय कन्हैया लाल की।
हाथी दीनो घोड़ा दीनो, और दीन्हीं पालकी।।
कौन कूँ दये हाथी घोड़ा कौन कूँ दिये पालकी।
छोरन कूँ हाथी घोड़ा, बूढ़न कूँ पालकी।।
छोरन कूँ लड्डू पेड़ा, बूढ़न कूँ लापसी।
कंघा दीने दर्पण दीने, दीन्हीं बिन्दी भालकी।।
रतन दिये हार दिये, गाय व्यानी हाल की।
कण्ठा और कठूला दिये, दिन्हीं मुक्तामाल की।।
जय यशोदा लाल की, जय हो दाउ दयाल की।
जय बोलो नन्दलाल की, जय बोलो गोपाल की।।

कन्हैया झूलें पलना

कन्हैया झूले पलना, नेक धीरे झोटा दीजो।
नेक धीरे झोटा दीजो, नेक होले झोटा दीजो।।

मथुरा में हरि जनम लियो है, गोकुल में झूले पलना।
ले वसुदेव चले गोकुल कूँ, याके चरण पखारें यमुना।।

काहे को याको बनो पालना, काहे के लागे फूंदना।
रतन जटित को बनो पालनो, रेशम के लागे फूंदना।।

गोरे नन्द यशोदा गोरी, कारो जायो ललना।
'चन्द्रसखी' भज बाल कृष्ण छवि चिरजीवो तेरो ललना।।

आज नन्द द्वारे बधैया बाजे

आज नन्द द्वारे बधैया बाजे।

कौन लुटावे अन्न धन सोना, कौन लुटावे वस्त्र भैया।
बाबा लुटावे अन्न धन सोना, मैया लुटावे वस्त्र भैया।।
आँगन में सखि नाचें गावें, द्वार बजे शहनैया।
चलो सखि नयन सफल करि आवै, प्रकटै कुंवर कन्हैया।।
नन्द को लाल सखा ग्वालन को, बलदाऊ को भैया।
दही हरदी की कीच मची है, बाबा के अंगनैया।।
चढ़े विमान सुमन सुर बरसे, देत है नन्द दुहैया।
देत आशीष गोप गोपी जन, चिरजीवी दोऊ भैया।।

आज मैया यशोदा के द्वार

आज मैया यशोदा के द्वार, बधैया बाज रही।
कौन पुण्य कर आई यशोदा, गोद भरी करतार।।
कंचन थार लिये ब्रज युवती, गावत मंगलचार।
बाबानन्द जू करत मुदित मन, यथायोग्य सत्कार।।
सुरनर मुनि दर्शन को आये, कपट रूप तन धार।
अद्भुत कान्ति ललन मुख ऊपर, होत भवन उजियार।।

लाला की पैजनियां बाजे रे

रून झुन रून झुन झनन झनन झन, बाजत है पैजनियां।
मातु यशोदा चलन सिखावै, उंगली पकड़ दोउ कनियां।
पीत झंगुलिया तन पर सोहे, सिर टोपी लटकनियां।
तीन लोक जाके उदर बिराजे, ताकि नचावै ग्वालिनियां।
'सूरदास' प्रभु तन को निहारे, सकल विश्व कौ धनियां।

चलो देख आवें नन्द घर

चलो देख आवे नन्द घर लाला हुआ।
यदुवंश के कुल का उजाला हुआ।
सखी बृज के सब ग्वाल होके दिल में खुशहाल।
वैयां गर्दन में डाल नाचें दे दे कर ताल।
आज नन्द का नशीबा उजाला हुआ।
चलो देख आवें नन्द घर लाला हुआ।।
सभी हिलमिल के ग्वाल करे जै जै गोपाल।
बाजे शंख घड़ियाल जन्म लीनो नन्दलाल।
झूले अंगना में पलना जहां लाला हुआ।
चलो देख आवें नन्द घर लाला हुआ।।
आज बृज में महाराज, करने भक्तों का काज।
जुड़ा सारा समाज करो दर्शन सब आज।
सुख नैनों को पहुंचाने वाला हुआ।।
चलो देख आवें नन्द घर लाला हुआ।।
देखो गोकुल की ओर, सावन भादों का शोर।
बोले पंछी वन मोर, मानौ बदरी की घोर।
बूँद आनन्द की बरसाने वाला हुआ।
चलो देख आवें नन्द घर लाला हुआ।।

बृज में है रही जय जय कार

बृज में है रही जय जयकार
नन्द घर लाला जायो है।
लाला जायो है यशोदा ने लाला जायो है।...

ग्वाल बाल सब हिलमिल गावै।
जूथ के जूथ नन्द घर आवैं।
ब्रह्मानन्द समान आज सुख सबने पायो है।

ब्रज चौरासी कोश में भैया।
सबही कहें धन यशोदा मैया।
अस्सी साल की आयु में सुत ऐसो जायो है।..

ब्रह्मा शिव सनकादिक आये।
सिद्ध मुनि सब देव सिधाये।
घर ग्वालन को रूप सब ही मिल मंगल गायो है।

नन्द यशोदा भाग्य बढ़ाई।
सबही देने लगे बधाई।
शारद शेष सकहिं नहिं गाई
ऐसो अद्भुत सुत तो काहूँ ओर न जायो है।....
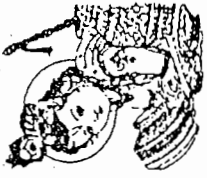
कृष्ण जनम सुनि आई

कृष्ण जनम सुनि आई
यशोदा मैया दे दो बधाई।
टीका भी लूँगी झूमर भी लूँगी,
कुण्डल की कर दोऊ साई।
हरबा भी लूँगी नकलस भी लूँगी,
लॉकेट की कर देऊ साई।
दस्ते भी लूँगी चूड़ी भी लूँगी
छड़ियों की कर देऊ साई।
साड़ी भी लूँगी लहंगा भी लूँगी,
चूनर की कर देऊ साई।
आयल भी लूँगी, पायल भी लूँगी,
बिछुआ की कर देऊ साई।
''चन्द्र सखी'' भज बालकृष्ण छवि,
जी भर के लेऊँगी बधाई।

मालिनियाँ लाई

सुन पावन प्रभु प्रगट भये, इन्द्रादिक सुरवृन्द।
चलें भेंट लें दरश हित, हर्षित अति आनंद।।

मालिनियाँ लाई, नये वंदन वारे।
राजा दशरथ घर सुत जनमें है, लगे अति प्यारे।।

मानुष तन धर देव दनुज सब, अवध पधारे।
भव भय बन्धन काटन वारे, प्राण अधारे।।

छाई खुशी तिहूँ लोक सुखी भये, तन मन प्यारे।
भगवत दुख निबारन कारन, राज दुलारे।।

छगन मगन मेरे लाल को

छगन मगन मेरे लाल को, आजा निंदिया आ।
चंचल मोहन श्याम के, नैनन बीच समा।।

जत तप पूजा पाठ सौं विधिना दियो मोहिलाल,
सो जा कन्हैया लाड़ले, मैया बजावे ताल।।
कैसे सुलाऊँ लाल को, धीरे-धीरे लौरी गा।। छगन.....

सोवै कन्हैया पालना, याकी है छवि अभिराम।
आंगन की शोभा मेरो, मन मोहन घनश्याम।।
आजारी निंदिया लाल को, मैया रही तो कूँ बुला।।

रे मैया तेरे द्वारे

रे मैया तेरे द्वारे, यशोदा तोरे द्वारे।
बाला जोगी आऽऽऽ यो बाला जोगी आयो।

अंग भभूति गले मुंडमाला।
शेषनाग लिपटाओ, मैया।
बाँको तिलक भाल चन्द्रमा।
घर–घर अलख जगायो, मैया।।मैया तोरे......

लेकर भिक्षा चली नन्दरानी।
कंचन थार भरायो, मैया।।
लो भिक्षा जोगी जाओ आसन पर।
मेरो बालक है डरायो, जोगी।। मैया तोरे.....

ना चाहिए तेरी दौलत दुनियां
ना ये कंचन माया, मैया।।
अपने बालक का दर्शन करो दो मैया।
मैं दर्शन को आया, मैया।।मैया तोरे.....

पंच बार परिक्रमा करके।
श्रृंगीनाद बजायो।।
'सूर' श्याम बलिहारी कन्हैया।
जुग–जुग जिये तेरो जायो मैया।। मैया तोरे......

जुग जुग जीवै री यशोदा मैया

जुग–जुग जीवै री यशोदा मैया, तेरो ललना।

बड़ भागिन तू मात यशोदा, ऐसो सुत तैने जायो।
पूरणब्रह्म जगत को स्वामी, सो तैने गोद खिलायो।।
ताकों डार झुलावै पलना, तेरो ललना......

धन्य घड़ी जब होय यशोदा मैया कहकर बोले।
नूपुर बाँध दोऊ चरणन में घुटवन घुटवन डोले।।
पकड़े बाबा की अंगुरिया तेरो ललना....

आशा लेकर बड़ी दूर से दर्शन करवे आयो।
मेरो इष्ट जगत को स्वामी सो तैने गोद खिलायो।।
जाके दशर बिना मोहि कलना, तेरो ललना....

जो माँगे सोई ले ले बाबा भोजन साज जुटाऊँ।
तेरो वेष देख डरपैगो बालक नाय दिखाऊँ।।
मेरो छोटो सो ललनवा–सो वै पलना।। जुग जुग

मायाकाल डरै जाके डर भगतन को हितकारी।
अपने सुत को मरम न जाने तू भोली महतारी।।
जग में नाहै याकी तुलना – तेरो ललना.....

नाचे नन्दलाल

नाचे नन्दलाल, नचावै हरि की मैया।
मथुरा में हरि जन्म लियो है
गोकुल में पग धरो री कन्हैया।।

रूनक–झुनुक पग नूपुर बाजै,
ठुमुक–ठुमुक पग धरैरी कन्हैया।

धोती न बाँधै जामो न पहिरै,
पीताम्बर को बड़ो री पहरैया।।

टोपी न ओढ़े लाला फेंटा न बाँधे,
मोर मुकुट को बड़ो री पहरैया।।

शाल न ओढ़े दुशाला न ओढ़े
काली कमरिया का बड़ो री ओढ़ेया।।

दूध न भावे याने दही न भावे।
माखन मिश्री को बड़ी री खवैया।।

चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि।
हँस हँस कण्ठ लगावे हरि की मैया।।

रोय रोय के यूँ कहे यशोदा

रोय रोय के यूँ कहे यशोदा में झंझट में पड़ गई रे।
बरसाने की कोई गुजरिया, लाल पे टोना कर गई रे।।

प्रात होत गैयन संग जावै, साँझ भये घर आवै है।
मेरो लाल काऊँ ग्वालिन को उरहानो नांय लावै है।
मगन रहे अपनी ही धुन में वंशी मधुर बजावै है।
ताहु पे ये चुगल खोर मेरे कान्ह की चुगली खावै है।
परसों की होनी तो सचमुच अनहोनी में टल गई रे....

ऐसी दशा भई मेरे सुत की बोलूँ तो न बोल सके।
लेय श्वांस पे श्वांस पलक बेहोशी में नाय खोल सके
घर के हूँ आंगन में अब वह चार कदम नाय डोल सके।
ऐसो कोई वैद्य जो मेरे कान्ह की नवज टटोल सके।
कियो टोटका द्वारे पे, चौमुंहा दीवला धर गई रे....

सबके मन में चिंता व्यापी, दाऊ है असमंजस में
खायवो पीवो कछु न भावै, मानो विष घोलो रस में
ऐसी ठगनी कौन कन्हैया, कर लीनो अपने वश में
उठ उठ खाय पछाड़ दर्द है रह्यो कान्ह की नश नश में
ज्वानी की मस्तानी कोई फूंक कान मे भर गई रे....

आज मोरे अंगना में

आज मोरे अंगना में आवो नन्दलाल।
चले आवो गोपाल।
दरसन की प्यासी गुजरिया श्याम ।।टेक।।

अंगना में आवो मेरे माखन कूँ खावो।
मीठी–मीठी बतियाँ सुनावो नन्दलाल।।

अंग पै झंगुलिया शीश पै लटुकिया।
दूध की दँतुलिया दिखावो नन्दलाल।।2।।

रेन नहि सोवे उठि भोर ही विलोवे दधि।
गावै और ध्यावै तोई कूँ नन्दलाल।।3।।

कोरी कोरी मटकिन में धौरी धौरी गैंयन को।
न्यारे ही जमाय राख्यौ दहि नन्दलाल।।4।।

खावो ब्रजरानी को माखन नित्यप्रति।
प्रेम ते गरीबनी को पावौ नन्दलाल।।5।।

काउसी ने कर दियो रे टोना

काऊसी ने कर दियो रे टोना।
अरी मेरो मचलो श्याम सलोना।।
भूल गई आज मैंने याके माथे दियो ना डिठोना।
रोय रोय रूदन करे–आँगन में दिये सब फोर खिलौना.....
दूध न पीवै लाला दही ना खावै नाय लै माखन लोना
नहावै न धोवे सुध विसराई आँख न खोले मेरो छोना
पहिले ही मैंने कही लाल इन सखिन बीच नचो ना।
बुरी नजर है इन गोपिन की, बरजे से मानो ना...
बोली ललिता और विसाखा यशुमति माय सुनो ना।
राई नोन करो लालापै धर देऊ कछु उठोना।।
कियो उसारो दे दई धूनी यशुमति देर करी ना।
नैना खुल गये मन मोहन के हंसन लगै ले खिलौना...
काऊ सी ने झार दियो रे टोना
अरी मेरो खिल गयो श्याम सलोना....

चोरी करतो डोले श्याम

चोरी करतो डोले, श्याम मोते सूधौ न बोले
जबहिं देख लेय सूनी बाखर, घर की सांकर खोले।।श्याम
ग्वाल बाल ले घर में आवे, माखन माट टटौले।।श्याम
दधि मेरो खाय मटुकिया फोरे, रस में विष कूँ घोले।।श्याम
जो मैं पकरन याकूँ भाजी, वैयाँ पकर झकझोरे।।श्याम
छोड़ूँ गांम तेरो बृजरानी, तुम ते सांची बोले।।श्याम
''नारायण'' नटखट नंद नंदन, कहा जाने प्रीति को मोले।।श्याम

तेरे लाला ने माटी खायी

तेरे लाला ने ब्रज रजखाई, यशोदा सुन माई ।टेक।

अद्भुत खेल सखन संग खेलो,
छोटो सो माटी को ढेलो।
तुरत श्याम ने मुख मे मेलो,
याने गटक गटक गटकाई।। यशोदा

दूध दहि को कबहूँ न नाटी,
क्यों लाला तैंने खाई माटी।।
यशोदा ले समझा रही सांटी,
याकूँ नेक दया न आई।।यशोदा...

मोहन को मुखड़ो खुलवायो,
तीन लोक या में दरशायो।
तब विश्वास यशोदहि आयो,
ये तो पूरण ब्रह्म कन्हाई।। यशोदा....

ऐसो रस नहिं है माखन में,
मेवा मिसरी और दाखन में।
जो रस है ब्रज रज चाखन में,
याने मुक्ति की मुक्ति कराई।। यशोदा....

काली दह पे खेलन आयो

काली दह पे खेलन आयोरी, मेरो वारो सो कन्हैया।
ग्वालबाल सब सखा संग में गेंद को खेल रचायोरी।
काहे की पट गेंद बनाई, काहे को डण्डा लायौरी।
रेशम की पट गेंद बनाई, चंदन को डण्डा लायौरी।।
मारी टोल गेंद गई दह में गेंद के संग ही धायोरी।
नागिन जब ऐसे उठि बोली, क्यों तू दह में आयो री।।
कै तू लाला गैल भूलि गयो, कै काऊ ने बहकायो री।
नागिन नाग जगाय दे जल्दी, वाही की खातिर आयो री।।
हुया युद्ध दोनों में भारी अंत में नाग हरायो री।
रमन द्वीप कूँ नाग भेद दियो, फन पै चिन्ह लगायोरी।।

ताण्डव गति मुण्डन पर

ताण्डव गति मुण्डन पर नाचत गिरिधारी।

पम्–पम् पम्पग पटकत, फम्–फम्–फम् फननि पर।
विम्–विम्–विम् विनति करत, नागवधू हारी।।

ससिक–ससिक सनकादिक, नन् नन् नन् नारद मुनि
मम्–मम्–मम् महादेव, बम्–बम्–बम्– बलिहारी।।

विविध–विविध विद्याधर, दम्–दम्–दम् देव सकल।
गं–गं–गं गुनि गंधर्व, नांचत दे तारी।।

'सूरदास' प्रभु की वाणि किं–किं किनहुं न जानि।
धन् धन् धन् चरन परत, निर्भय भय हारी।।

लग रही आस करूँ ब्रजवास

लग रही आस करूँ ब्रजवास, तलहटी गोवर्धन की मैं।
भजन करूँ और ध्यान धरूँ, छैया कदमन की मैं।
करूँ सदा सत्संग मण्डली संत जनन की मैं।।
पलकन डगर बुहार रेणुका ब्रज गलियन की मैं।
शीस चढ़ाय रज अंग लपटाऊँ कृष्ण चरण की मैं।।
करूँ गंग स्नान मानसी अघन हरन की मैं।
अभिलाषी प्यासी रहे अँखियाँ हरि दर्शन की मैं।।
भूख लगे घर घर से भिक्षा करूँ द्विजन की मैं।
गंगा जल में धोय भेंट करूँ नन्द नन्दन की मैं।।
सीत प्रसाद ही पाय करूँ शुद्धी निज तन की मैं।
सेवा में सदा रहूँ प्रिय निज भक्तन की मैं।।

मैं तो गोवर्धन कूँ जाऊँ मेरे वीर

मैं तो गोवर्धन कूँ जाऊँ मेरे वीर । नाय माने मेरो मनुआ।

सात कोश की दे परिकम्मा।
मैं तो मानसी गंगा नहाऊँ मेरे वीर....
सात सेर की करूँ कढ़ाई
मैं तो ब्राह्मण न्यौत जिवाऊँ मेरे वीर....
एक रूपा की पाव जलेबी।
मैं तो बैठ सड़क पै खाऊँ मेरे वीर....
चंपा जाय चमेली जाय रहीं।
अरी मैं कैसे रह जाऊँ मेरे वीर...
श्री गिरिराज पे दूध चढ़ाऊँ
मैं तो पेड़ा भोग लगाऊँ मेरे वीर....
नाय मानो मेरो मनुआ।

तेरो सब संकट मिट जाय

तेरो सब संकट मिट जाए, तू पूजा करि गोवर्धन की।
तेरो जनम-मरण मिट जाय, तोहे नन्दलाला मिल जाये। तू पूजा....
सब मिलि प्रणाम पहिले कीजै, गिरिराज हृदय में धर लीजै।
चलो मन में प्रेम बढ़ाय, शोभा निरखो तुम या बन की।।1।।
आगे पूँछरी को लौठा है, जो खाय खाय भयौ सिलौटा है।
करौ सब प्रणाम सिरनाय, जो रक्षा करैं अपने जन की।।2।।
है मुखार बिन्दु की ये झाँकी, याके मुकुट लकुट भृकुटी बाँकी।
या पै दूध की धार चढ़ाय, इच्छा पूरण होवे मन की।।3।।
अब राधा कुण्डस्नान करौ, मन श्री राधे जू कौ ध्यान धरौ।
जो इनकी शरण में आय, सब व्याधि मिटै तन की मन की।।4।।
परिक्रमा पूर्ण भई पूर्णकाम, नन्द बाबा के संग मधुर श्याम।
कर जोड़ौ शीश नवाय, आरम्भ करो विधि पूजन की।।5।।

श्री गोवर्धन महाराज

श्री गोवर्धन महाराज, तेरे माथे मुकुट विराज रह्यो।

तेरे कानन कुण्डल सोह रहे, और भृकुटी बनी विशाल।
तो पै पान चढ़े तो पै फूल चढ़ै और चढ़ै दूध की धार।।

तेरे माथे बेंदा रोरी को, और ठोड़ी पे हीरालाल।
प्रभु सात कोश में रूप तेरो, और संकट दूर करो मेरो।

तुम भक्तन के सिरताज। तेरो माथे....

नख पर गिरिवर लीन्हों धार

नख पर गिरवर लीन्हों धार, कन्हैया मेरो वारो।

यो कहैं यशोदा मैया, नेंक जोर लगाओ मेरे भैया।
गिरवर में बोझ अपार कन्हैया मेरो वारो......

लाला की नरम कलैयां, कहीं मुरक न जाँय बाकी वैयां।
कैसे झेले इकलो भार–कन्हैया मेरे वारो......

जब कोप इन्द्र ने कीन्हों बृज गोवर्धन तर लीन्हों।
बादल बरस–बरस गये हार–कन्हैया मेरो....

यो कहें पूँछरी वारौ, लठिया कौ दियो सहारो।
रे मन भज ले कृष्ण मुरार–कन्हैया मेरो वारो....

राधा नाचै कृष्ण नाचै

राधा नाचैं कृष्ण नाचैं, नाचैं गोपी जन।
मन मेरो बन गयो सखी री पावन वृन्दावन।।
सूरज नाचै, चंदा नाचै, नाचै तारागण।। मन मेरा.....
गंगा नाचै, यमुना नाचै, नाचै सरयू संग।।मन मेरौ.....
गन्धर्व नाचै, ऋषी मुनि नाचै नाचै देवगण।।मन मेरौ.....
ब्रह्मा नाचै, शंकर नाचै, नाचै नन्दी संग।।मन मेरौ.....

आओ मेरी सखियों

आओ मेरी सखियों मुझे मेंहदी लगा दो।
मेंहदी लगा दो, मुझे ऐसी सजा दो।
मुझे श्याम सुन्दर की दुलहन बना दो।।टेक।।

सत्संग में मेरी बात चलाई, सद्गुरू ने मेरी कीन्हीं सगाई।
उनको बुला के हथलेवा तो करा दो।।मुझे....

ऐसी पहनू चूड़ी जो कबहुँ नही टूटे।
ऐसा वरूँ दुलहा जो कबहुँ नही छूटे।
अटल सुहाग की बिंदिया लगा दो।। मुझे...

भक्ति का सुरमा मैं आँखो में लगाऊँगी।
दुनियां से नाता तोड़ा उनकी हो जाऊँगी।।
सद्गुरू को बुला के मेरे फेरे तो पड़वा दो।। मुझे....

बाँध के घुंघरू मैं उनको रिझाऊँगी।
लेके इकतारा मैं श्याम–श्याम गाऊँगी।।
सखियों को बुलाके मेरी विदा तो करा दो।।मुझे...

मुकुट धर साँवरे
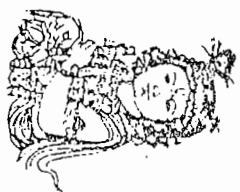
मुकुट धर साँवरे रे लाला दोई वापन के जाये।।टेक।।
एक द्वारिका में बसे रे लाला दूजौ वृन्दावन धाम।।1।।

बहिन सुभद्रा आपकी रे लाला भई अर्जुन की वाम।
कुन्ती बुआ सुत जन्म्यो रे करण क्वाँरे में भये सरनाम।।2।।

गोरे वसुदेव, देवकी रे लाला गोरे हैं बलराम।
तुम कारे कहाँ से भये रे लाला याको ठीक न ठाम।।3।।

हिलमिल गारी दे रही रे लाला कुण्डलपुर की वाम।
इनको बुरो मानो नहीं रे लाला सुन्दर माधव श्याम।।4।।

आज अयोध्या की गलियों में

आज अयोध्या की गलियों में, नाचे जोगी मतवाला।
अलख निरजंन खड़ा पुकारे, देखूँगा दशरथ लाला।।1।।

शैली श्रृंगी लिये हाथ में और डमरू त्रिशूल लिये।
छमक छमाछम नाचै जोगी दरस की मन में चाह लिये।
पग में घुंघरू छम–छम बाजै, कर में जपते है माला।।2।।

अंग भभूत रमाये जोगी, वाघम्बर कटि में सोहै।
जटाजूट में गंग विराजै, भक्तन के मन को मोहे।।
मस्तक पर श्री चन्द्र विराजे, गले मे सर्पो की माला।।3।।

राजद्वार पर खड़ा पुकारे, बोलत है मधुरी बानी।
अपने सुत को दिखादे मैया, ये जोगी मन में ठानी।।
लाख हटाओ पर ना मानूं, देखूंगा दशरथ लाला।।4।।

मात कौशिल्या द्वार पे आई, अपने सुत को गोद लिये।
अति विभोर हो शिव जोगी ने, बालरूप के दरस किये।।
चले सुमिरते राम नाम को, कैलासी काशी वाला।।5।।

प्यारे रघुरैया

चलोरी सखी देख आवै, प्यारे रघुरैया।

राम लक्ष्मण, भरत, शत्रुघन, सुन्दर चारउ भैया।
कौशिल्या, कैकई, सुमित्रा, पुनि–पुनि लेत बलैया।।

अति पुनीत मधुमास लगन, ग्रह, बारयोग समुदइया।
मध्य दिवस में प्रगट भयें है, सबहिन के सुख दइया।।

सुनि दशरथ नृप खोलि खजाने, मंगन तृप्त करइया।
लाल निछावर वसन लुटावै, भूषण मणिन जढ़ैया।।

घर–घर वन्दनवार पताका, बरनि न जाय निकैया।
पुर नर नारि मगन है गावै, बाजत आनंद वधैया।।

बधाइया बाजे आंगने में

चन्द्रमुखी मृग नयनी अवध की, तोरत तान रागने में।
प्रेम भरी प्रमदागढ़ नाचै, नूपुर बाँधे, पायने में।।

न्यौछावर श्री रामलला जू की, नहिं कछु लाज मांगने में।
'सिया अली' यह कौतुक देखत वीती रजनी जागने में।

रानी तेरो लाला बढ़े जैसे चन्दा

नित्य सगुन को यह फल पायो, घर–घर भयो अनन्दा।
अवहीं वंदनवार बदाऊँ, विप्र पड़े मुनि छन्दा।।

राई नौन उतारौ री सखियां प्रकट भये छवि कन्दा।
'पागलदास' निरखि लालन मुख, मिट जैहें दुख द्वन्दा।।

लाल पे टोना जिन कोउ डारौ

मिथलापुर की सखी सवै मिल, अपने नैन संभारौ।
सिया मातु महारानी सुनैना, राई नौन उतारो।

लायोही कोउ भाल डिठौना, तड़पत जिया हमारौ।
'लालमणि' रघुवर दूल्हा पै, तन मन धन सब वारौ।।

पलना में ललना झुलावै

पलना में ललना झुलावै, यशोदा मैया पलना में ललना।

पलना झुलावे और ललना सुलावे,
निरखि श्याम सूरत न फूली समावे, पलना.....

नजरिया उतारे ढिठोना लगावै,
करै राई नोन और उठानो उड़ावै। पलना.....

कबहूँ दौर जावै बाबा नंद कूँ बुलावै,
लाला उठावे दोनों गोदी खिलावै। पलना....

पदावली

आली री मोहे लागै

आली री मोहे, लागे वृन्दावन नीको।
घर–घर तुलसी ठाकुर पूजा, दर्शन गोविन्द जी को।

कुन्जन–कुन्जन फिरत राधिका, शब्द सुनत मुरली को।
निर्मल नीर बहत यमुना में, भोजन दूध दही को।।

रतन सिंहासन आप विराजे, मुकुट धरें तुलसी को।
''मीरा'' के प्रभु गिरिधर नागर, भजन बिना नर फीको।।

पायोजी मैंने रामरतन धन पायो

पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।

वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरू, कृपा कर अपनायो।।
जनम जनम की पूँजी पाई जग में सभी गुमायो।।

खर्चे न कोई चोर न लेवै, दिन–दिन बढ़त सवायो।।
रात की नाव खेवदिया सतगुरू, भवसागर तरि आयो।।

''मीरा'' के प्रभु गिरिधर नागर, हरष–हरष जस गायो।

छीन लिया मेरा भोला सा मन

छीन लिया मेरा भोला सा मन।
राधारमण प्यारे राधा रमण।

गोकुल का ग्वाला वो ब्रज का बसैया।
सखियों का मोहन और माँ का कन्हैया।।
भक्तों का जीवन और निर्धन का धन। राधा....

यमुना के जल में वहीं श्याम खेले।
लहरों में उछले और करत किलोलें।
बिछुड़न कभी और कभी हो मिलन।। राधा...

जाकर के देखा वो मन्दिर के अन्दर
घट–घट के अन्दर वही श्याम सुन्दर।।
कुण्डल हलन और तिरछी चलन।राधा.....

जय जय राधा रमण हरि बोल

जय जय राधा रमण हरि बोल

अंखियन काजल मृगछोना सो।
नख बेसर जादू टोना सो।।
दोऊ रस के भरे हैं कपोल ।। जय जय.....

नव नागर किशोर नवल रसिया।
प्यारो बृज को छैल कान्हा मन बसिया।।
करे कालिन्दी कूल किलोल। जय जय......

अंगडाई ले मृदु मुस्कन पे।
कजरीली तिरछी चितबन पे।
''शुकदास'' बिका बिनमोल।। जय जय....

नटवर नागर नन्दा

नटवर नागर नन्दा भजो रे मन गोविन्दा।
श्याम सुन्दर मुख चंदा भजो रे मन गोविन्दा।।

तू ही नटवर तू ही नागर तू ही बालमुकुन्दा।
सब देवों में कृष्ण बड़े है, ज्यों तारन विच चन्दा।।

सब सखियन में राधा बड़ी है, ज्यों नदियन विच गंगा।
वृन्दावन की कुंज गली में, नाचत बालमुकुन्दा।।

ध्रुव प्रहलाद सुदामा तारे नरिसिंह रूप धरन्दा।
चन्द्ररवि भज बालकृष्ण छवि काटत यम के फंदा।।

बांसुरी बजाये आज

बांसुरी बजाये, आज रंग से मुरारि

शिव समाधि भूल गये, ऋषि मुनि की नारी....
वेद पढ़त ब्रह्मा भूले, भूले ब्रह्मचारी।।....बांसुरी बजाये

रम्भा सम ताल चूकी, भूली नृत्यकारी।
जमुना जल उलटो वहयो, शोभा आज भारी।।....बांसुरी बजाये

वृंदावन बंसी बजी, तीन लोक प्यारी।
ग्वाल बाल मगन भये बृज की सब नारी।।......बांसुरी बजाये

सुन्दर श्याम मोहिनी मूरत नटवर वपुधारी।
'सूर' को प्रभु मदन मोहन चरनन बलिहारी।।....बांसुरी बजाये।

बाजे रे मुरलिया बाजे

बाजे रे मुरलिया बाजे।
अधर धरे मोहन मुरली पर।
होंठ पे माया बिराजे।
हरे हरे बाँस की बनी मुरलिया।
मरम मरम को छुये अँगुरिया।।
चंचल चतुर अंगुरियां जिस पर।
कनक मुंदरिया साजे।।
पीरी मुंदरी, अंगुरी श्याम,
मुदरी पर राधा का नाम।
आखर दीखे, सुने मधुर स्वर,
राधा भोरी लाजे ।। बाजे................
भूल गई राधा भरी गगरिया।
भूल गये गोधन को सांवरिया।।
जाने न जाने ये जग जाने।
जाने सब जग जाने।।
बाजे रे मुरलिया। बाजे.................

रे मन कृष्ण नाम कहि लीजे

रे मन कृष्ण नाम कहि लीजे।

गुरू के वचन अटल करि मानहि, साधु समागम कीजे।
पढ़िये सुनिये भगति भागवत, और कहा सखि कीजै।।
कृष्ण नाम बिनु जनम बादहिं, विरथा काहै कीजै।

कृष्ण नाम रस बहौ जात है तृषावन्त व्है पीजै।
'सूरदास' हरि शरण ताकिये, जनम सफल करि लीजै।।

तन तो मन्दिर है

तन तो मन्दिर है हृदय है वृन्दावन।
वृन्दावन में है बसे श्री राधिका रमन।।
प्रेम ही तो तीर्थ है प्रेम धर्म है।
प्रेम ही है अर्चना प्रेम कर्म है।।
प्रेम है प्रभु का नाम प्रेम ही भजन।। तन तो....
जग तो अन्धकार है इससे तू निकल।
ज्ञान का प्रकाश कर मूढ़ तू सम्भल।।
श्री राधा कृष्ण के चरण में नित्य कर नमन।। तन तो....
कामना को छोड़ तू भक्ति राह चल।
वासना में क्यूं बहे आरती सा जल।
आत्मा मरे नहीं तन का हो निधन। तन तो....

जादू भरी तेरी आँखे

जादू भरी तेरी आँखे जिधर गई।
नैनों की कटारी बारी–बारी छुई छुई,
छतियाँ से उतर गई। जादू....
प्रेम की लरी अरी दृग दोनों।
वरष परी मोती सी बिखर गई।। जादू भरी.....
अब पल पलक टरत नहिं टारे
छिन छोरत जनु जान निकर गई। जादू...
नैनों की कटारी बारी–बारी पलकन मारी।
जादू की पिटारी दृग छुई मुई कर गई ।। जादू..
मुकुलित ललित कली हिय विकसित
प्रेम पराग सरस रस भर गई।। जादू...
निरखि छटा घनघोर घटा
भावना की उमड़ गई।। जादू....

तनिक हँसि हेरैं जो राजकुमार

तनिक हँसि हेरैं, जो राजकुमार
बुधि बौराइ हिराई जात मन,
रहत न तन को संभार.....

दूरहिं ते चितवतहिं जाके, मदन भयऊ जरिछार।
सो त्रिपुरारी भिखारि वेष धरि अलख जगावत द्वार।।

सपने हुँ जिनके निकट न आवत, माया मोह विकार।
सो भुसुंडि शिशु चरित विलोकत बंध्यो प्रेम की जार।।

सुनत बोल विनमोल विकानी, सारदसी हुसियार।
''राम सहाय'' जाय सोइ जाने, अवध नगर के बजार।।

मन मोहन जाकि दृष्टि परत

मन मोहन जाकी दृष्टि परत,
ताकी गति होत है और–और।
न सुहात भवन, तन असन बसन,
बनही को धावत दौर–दौर।
नहि धरत धीर, हिय बरत पीर,
व्याकुल है भटकत ठौर–ठौर।
कब अँसुवन भर नारायण मन,
झांकत डोलत है पौर–पौर।।

रे मेरे मन राधे राधे बोल

रे मेरे मन राधे राधे बोल, अन्तर के पट खोल।
वृन्दावन की कुंज गलिन में, निर्भय होके डोल।।

बृज की रज माथे धरि लीजै, जो है अति अनमोल।
सार यही जीवन का "भगवत", हिय अपने में तोल।।

◆ ◆ ◆

मिला दो श्याम से ऊधो

मिला दो श्याम से ऊधौ, तेरा गुण हम भी गायेंगे।

गोकुल को छोड़कर जब से, गये वापस नहीं आये।
खता क्या हो गई हमसे, अरज अपनी सुनायेंगे।

प्रीति हमसे लगाकर के, विसारा नन्द नन्दन ने।
चरण में शीश धर–धर के, हम उनको मनायेंगे।।

फिर कभी आये गोकुल में, हमें दर्शन दिला देना।
'ब्रह्मानन्द' फिर उनको, न दिल से हम भुलायेंगे।।

प्रार्थना सुनिये श्री भगवान

प्रार्थना सुनिये श्री भगवान, कीजिये जन–जन का कल्याण...

हानि धर्म की बहुत हुई है, अंधकार ने ज्योति छुई है।
पृथ्वी पर अवतार लीजिए, कर निज वचन प्रमान.... प्रार्थना।।

आज भूमि जन भूमि दुखारी, वाणी वीणा शरण तुम्हारी।
वीणा को झंकार दीजिए, वाणी को वरदान.... प्रार्थना।।

भारत में फिर गूँजे गीता, भूमि भागवत जागे सीता।
भारत को फिर धन्य कीजिए, कर निज वचन प्रवान.....प्रार्थना।।

घनश्याम तुम्हें ढूँढने जाये कहाँ

घनश्याम तुम्हें ढूँढने जायें कहाँ कहाँ।
अपने विरह की याद दिलाये कहाँ कहाँ।।

तेरी नजर में जुल्फ में मुस्कान मधुर में।
उलझा हुआ है दिल मेरा सुलझाये कहाँ कहाँ।।

तेरे चरणों की खाक में खुद खाक बने हम।
अब खाक में हम खाक रमाये कहाँ कहाँ।।

जिनकी तबीब देख के खुद बन गये मरीज।
ऐसे मरीज मर्ज को दिखायें कहाँ कहाँ।।

दिन रात अश्रु "बिन्दु" बरसते तो है मगर।
सब तन में लगी आग बुझाये कहाँ कहाँ।।

कृपा की न होती

कृपा की न होती जो आदत तुम्हारी।
तो सूनी ही रहती, अदालत तुम्हारी।।

जो दीनों के दिल में, जगह तुम न पाते।
तो किस दिल में होती हिफाजत तुम्हारी।।

गरीबों की दुनियां है, आबाद तुम से,
गरीबों से है, बादशाहत तुम्हारी।।

न तुम होते हाकिम, न हम होते मुजरिम।
न घर–घर में होती इबादत तुम्हारी।।

तुम्हारी ही उल्फत के दृग ''बिन्दु'' हैं, यें
तुम्हें सौंपते है, अमानत तुम्हारी।।

भजन बिना तन राख की ढेरी

भजन बिना तन राख की ढेरी, जीवन रैन अन्धेरी।।. (टेक)
क्यों मूरख मन भटक रहा है, लोभ मोह में अटक रहा है।
भूल रहा भगवत की महिमा, मति मारी है तेरी।।जीवन.........
नाम मिलाता हरि से प्यारे, नाम मिटाता सब अंधियारे।
मौत को भी हरि भजन मिटाता, है चरनन की चेरी।। जीवन
रोम–रोम में राम रमा है, राम नाम पर जगत थमा है।
राम भजन कर ले मेरे भाई, बात मान ले मेरी।। जीवन.........

जो भजे हरि को सदा

जो भजे हरी को सदा, सोई परम पद पायेगा।
देह के माला तिलक छापे नहीं किसी काम के।
प्रेम भक्ति के बिना नहिं नाथ के मन भायेगा।
दिल के दर्पण को सफा कर, दूर कर अभिमान को।
खाक हो गुरू के चरण की, तो प्रभु मिल जायेगा।।
छोड़ दुनियां के मजे सब बैठकर एकान्त में।
ध्यान धर हरि के चरण का, फिर जन्म नहीं पायेगा।।
दृढ़ भरोसा मन में करके जो जपें हरि नाम को।
कहता ''ब्रह्मानन्द'' ब्रह्मानन्द बीच समायेगा।।

कछु लेना ना देना

कछु लेना न देना मगन रहना
पाँच तत्व का बना पींजरा, उसमें बोले है मेरी मैना....
गहरी नदिया नाव पुरानी, केवटिया से मिले रहना....
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधु, गुरू चरनन से लिपट रहना।

वाह वाह रे मौज फकीरा दी

वाह–वाह रे मौज फकीरा दी

कभी चबाये चना चबेना, कभी लपट ले खीरा दी।
कभी तो ओढ़े साल दुसाले, कभी गुदड़िया लीरा दी।।

कभी तो सोवै रंग महल में, कभी तो गली अहीरा दी।
मंग तंग के टुकड़े पहने, चाल चले है अमीरा दी।

हर देश में

हर देश में तू, हर वेश में तू, तेरे नाम अनेक तू एक ही है।
तेरी रंग भूमि ये विश्वधरा, तेरे रूप अनेक तू एक ही है।

सागर से उठा बादल बनकर, बादल से गिरा बरषा बनकर।
फिर नहर बनी नदियां गहरी, तेरे भिन्न प्रकार तू एक ही है।
हर देश...

चींटी से भी अणु परमाणु बना, सब जीव जगत का रूप लिया।
फिर पर्वत वृक्ष विशाल बना, सौन्दर्य तेरा तू एक ही है।
हर देश....

ये दृश्य दिखाया है जिसने, वह है गुरूदेव की पूर्ण दया।
कृपा कर और न कोई दिखा, बस मैं और तू सब एक ही है।
हर देश.....

जिस देश में जिस भेष में

जिस देश में जिस वेश में परिवेश में रहो।
राधा रमण, राधा रमण, राधा रमण कहो।।
जिस संग में, जिस ढंग में, जिस रंग में रहो।
राधा रमण, राधा रमण, राधा रमण कहो।।
जिस भोग में, जिस योग में, जिस रोग में रहो।
राधा रमण, राधा रमण, राधा रमण कहो।।
जिस काम में, जिस धाम में, जिस गाम में रहो।
राधा रमण, राधा रमण, राधा रमण कहो।।

मैं देखूँ जिस ओर

मै देखूँ जिस ओर सखी री, सामने मेरे सांवरिया
श्याम ने मुझको जोगन बनाया, जहर का प्याला अमृत बनाय।
प्रेम के रंग में डूब गया दिल, जैसे जल में गागरिया।।

रो–रोकर हर दुःख सहना है, दुःख सह सह कर चुप रहना है।
कैसे बताऊँ कैसे बिछुड़ी, पि्रा के मुख से बांसुरिया।।

दुनियां कहती मुझको दिवानी, कोई न जाने प्रेम कहानी।
कृष्ण कृष्ण रटते ही रटते, मीरा हो गई बावरिया.....

बीत गए दिन भजन बिना

बीत गए दिन भजन बिना रे।
बाल अवस्था खेलि गँवाई, जब यौवन तब मान घणा रे।
काहे कारण मूल गवायौ, अजहू न गई मन की तृष्णा रे।।
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो, पार उतरि गए सन्त जना रे।।

हे गोविन्द हे गोपाल

हे गोविन्द हे गोपाल
अबतो जीवन हारे।।

नीर पीवन हेतु गयो सिन्धु के किनारे।
सिन्धु बीच बसत ग्राह चरण गहि पछारे।।
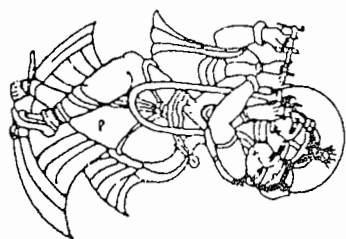
चार प्रहर युद्ध भयो ले गयो मझधारे।
नाक कान डूबन लागे, कृष्ण कूँ पुकारे।।

द्वारेका में शब्द गयो, शोर भयो भारे।
शंख चक्र गदा पद्म, गरूड़ ले सिधारे।।

'सूर' कहे श्याम सुनो, शरण हौं तिहारे।
अबकी बार पार करो, नन्द के दुलारे।।

पद

(1)

भजमन राम चरन सुखदाई।
जिहि चरनन से निकसी सुरसरी, संकर जटा समाई।
जटा संकरी नाम परयो है, त्रिभुवन तारन आई।।
जिन चरनन की चरन पादुका भरत रह्यो लिव लाई।
सोई चरन केवट धोई लीने, तब हरि नाव चलाई।।2।।
दण्डक वन प्रभु पावन कीनो, ऋषियन त्रास मिटाई।
सोई प्रभु जगत के स्वामी, कनक मृगा संग धाई।।3।।
सोई चरन संतन जन सेवत, सदा रहत सुखदाई।
सोई चरन गौतम ऋषि नारी, परसि परम पद पाई।।4।।

(2)

मदनगोपाल शरण तेरी आयो
चरणकमल की सेवा दीजे, चेरो कर राखो हर जायो।
धन धन मात पिता सुत बंधू, धन जननी जिन गोद खिलायो।
धन वे चरन चलत तीरथ को, धन गुरू जिन हरि नाम सुनायो।
जे नर विमुख भये गोविन्द सों, जनम अनेक महादुख पायो।
'श्रीभट्ट' के प्रभु दियो अभय पद, यम डरप्यो जब दास कहायो।

(3)

श्यामा प्यारी कब तुम कृपा करोगी।
मेरो मन नित चलत कुमारग, कब दुख दाह हरोगी।
अति दुर्गम भव जाल बँध्यों मैं, निज शरणहिं कब लोगी।
'वृन्दावन' को आस रावरी, दरशन कब तुम दोगी।।

(4)

टेर सुनो वृषभानु किशोरी।

बीती बृथा आयु बहुतेरी, शेष रही है थोरी।
मन अकुलात उपाय न सूझत, शरण गही दृढ़ तोरी।।
मोरी सहज कृपालु निहारो, नेक कृपा की कोरी।।

(5)

रे मन वृन्दाविपिन निहार।

विपिनराज सीमा के बाहर, हरि हू को न निहार।
यद्यपि मिलै कोटि चिन्तामणि, तदपि न हाथ पसार।
जै 'श्री भट्ट' धूलि धूसर तन, यह आशा उरधार।।

(6)

जो कोऊ वृन्दावन रस चाखै।

भुवन चतुर्दश तिहूँ लोक लौं, सपनेहुँ नहिं अभिलाखै।
युगलरूप विन पलक न खोलै, लाभ दिखावौ लाखें।
'ललित किशोरी' परे कुंज में, श्याम राधिका भाखै।।

(7)

हरि हम कब होंगे बृजवासी।

ठाकुर नन्द किशोर हमारे, ठकुराइन राधा सी।
कब मिलि है वे सखी सहेली, हरिवंशी हरिदासी।
वंशीवट की शीतल छैयाँ, सुभग नदी जमुना सी।
जाकी वैभव करत लालसा, कर मीड़ति कमला सी।
इतनी आस 'व्यास' की पुजबहु वृन्दा विपिन विलासी।।

(8)

लखी जिन लाल की मुस्क्यान।

तिनहिं बिसरी वेद विधि सब योग संयम ध्यान।
नेम वृत आचार्य पूजा पाठ गीता ज्ञान।
रसिक भगत दृग इई असि ऐंचि के मुख म्यान।

(9)

धन धन राधिका के चरन।

सुभग शीतल अति सुकोमल, कमल के से वरन।
परम मंगल मोदकारी, विरह सागर तरन।
दास 'परमानन्द' छिन छिन, श्याम जिनकी शरण।।

(10)

खेलन में को काको गुसैंया।

हरि हारे जीते श्रीदामा, बरबस ही कत करत रूसैंया।
जाति पांति हमते बड़ नाहीं, ना हम बसत तुम्हारी छैंया।।
अति अधिकार जनावत ताते, जाते अधिक तुम्हारी गैंया।
रूठ करे ता संग को खेले, हा–हा खात परत तब पैंया।
'सूरदास' प्रभु खेल्यौई चाहै, दाव दियो करि नंद दुहैया।

(11)

अखियाँ हरि दरसन की प्यासी।

देख्यो चाहत कमल नयन को, निशि दिन रहत उदासी।
केसर तिलक मोतिन की माला, वृन्दावन के वासी।
नेह लगाय त्यागि गये तृन सम, डारि गये गल फाँसी।
काहू के मन की को जानत, लोगन के मन हाँसी।
'सूरदास' प्रभु तुम्हारे दरस बिन, लैहों करवट कासी।

(12)

ऊधौ मोय ब्रज विसरत नाहीं।

हससुता को सुन्दर कलरव, अरू कदमन की छाँहीं।
वे सुरभी वे वच्छ दोहिनी, खिरक दुहावन जाँही।
ग्वालबाल सब करत कुलाहल, नाँचत गहि गहि वाँहीं।
यह मथुरा कंचन की नगरी, मणिमुक्ता जिहि माँही।
जवहि सुरत आवत वा सुख की, जिय उमगत सुधि नाहीं।

(13)

गाइये गणपति जगवंदन, संकर सुवन भवानी नन्दन।
सिद्धि सदन गजवदन विनायक, कृपासिन्धु सुन्दर सब लायक।
मोदक प्रिय मुद मंगल दाता, विद्या वारिधि बुद्धि विधाता।
माँगत 'तुलसीदास' कर जोरे, वसहिं रामसिय मानस मोरे।।

(14)

मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी
कितनी बार मोहि दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी
तू जो कहती बलकी बैनी, ज्यों है है लांबी मोटी
काढ़त गुहत न्हवावत पौंछत, नागनि सी भुई लोटी
काचो दूध पिवावत पचि–पचि देत न माखन रोटी
सूर श्याम चिरंजिव दोउ भइया, हरि हलधर की जोटी।

(15)

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।
तात मात भ्रात बन्धु, अपनौ नहिं कोई।।
छोड़ दई कुल की कानि, कहा करिहै कोई।
संतन ढिंग बैठि–बैठि, लोक लाज खोई।।
अंसुवन जल सींच सींच, प्रेम बेल बोई।
अब तो बेल फैल गई, आनंद फल होई।।
दूध की मथनियां, बड़े प्रेम से बिलोई।
माखन जब काढ़ि लियो, छाछ पियै कोई।।
भगति देखि राजी हुई, जगत देख रोई।
दासी मीरा लाल गिरधर, तारो अब मोही।।

(16)

झुकि आई रे बदरिया सावन की सावन की मनभावन की
सावन में उमग्यो मेरो मनुवा, भनक परी हरी आवन की
नन्हीं नन्हीं बुदियन मेहा वरषै, शीतल पवन सुहावन की
उमड़ घुमड़ चहुँदिशि से आयो, दामिनी दमकै झर लावन की
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, आनंद मंगल गावन की।

(17)

किस विधि से तोहे राखूँ पियरवा
नैन विच राखू तो हिया तरसत है
हिया विच राखूँ तो नैना तरसे।। तोह..
एकहु भांति न मन ठहरत है,
प्यारे बताओ मिलूँ केहि विधि से
नैना से नैना मिलाओ सांवरे
हिया हिय से, अरू गर गर से
'सियाअली' केहि भांति मिलोगे
ताप कटै अंग–अंग परसे

(18)

मूरति अति प्यारी हो रामजीकी
भाल विशाल तिलक दुति राजे, नयन रतनारी
चन्द्र बदन सिर मुकुट विराजे, कुंडल छवि वारी
वसु नायक बरबस मन मोहे, मदन मय हारी।। हो राम...

(19)

किशोरी तोरे चरनन की रज पाऊँ
बैठ रहूँ कुंजन के कोने, श्याम राधिका गाऊँ
जा रज को ब्रह्मादिक तरसै, सो रज शीष चढ़ाऊँ
व्यास स्वामिनी की छवि निरखत, विमल विमल यश गाऊँ

(20)

जगत में देखे सो सब चोर

हानि लाभ तृष्ना माया में, गिनत न संध्या भोर
राजा चोर राव और रानी, सहर चोर व्यौपारी
पाँच चोर सबके घर भीतर, कहा पुरूष कहा नारी
ब्रह्मा चोर आय वृन्दावन, बालक बच्छ चुराये
इन्द्र चोर पृथु कौ हय चोर्चों, वहु पाखण्ड बनाये
शंकर चोर हरत बहुत अवगुन, शिव शिव जोइ पुकारे
सन्त चोर हरि हृदय चुरायौ, जो त्रिभुवन विस्तारे
सब मिलि चोरी करी श्याम की, जो जायै वनि आई
'सूरदास' सठ कहाँ लगि बरनों, माखन चोर कन्हाई।

(21)

मैया मैं तो चन्द्र खिलौना लैहों

सुरभी कौ पय पान न करिहौ, बैनी सिर न गुथैहों।
मोतिन माल धरौं नाहीं उर पर, कण्ठ कठला न धरैहों।। मैया..
जैहो लोट अवई धरनी पर, तेरी गोदन अैहौ।।
लाल कहैहों नन्द बाबा को, तेरौ सुत न कहै हों।। मैय...
कान लाय समझावै जसुदा, बलदेवै न सुनैहों।
चन्दा हूँ ते अति सुन्दर तोहि, नवल दुलहनियां लैहौं मैया....
मेरी सुन तेरी सौं मैया, अबहिं विवाहन जै हों।
सूरश्याम सब सखा बराती, नूतन मंगल गैहौं।।
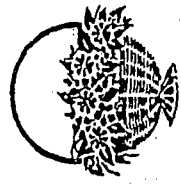
सीता राम जी की प्यारी

सीताराम जी की प्यारी रजधानी लागै–2
मोहे मीठो मीठो सरजू जी को पानी लागे।।

धन्य कौशिल्या धन्य कैकई, धन्य सुमित्रा मइया।
धन्य भूप दशरथ के आंगन, खेलत चारिउ भइया।।
मीठी तोतली रसीली प्रभु की बानी लागे...... मोहे....

छोटी छावनी रंग महल, हनुमान गढ़ी अति सुन्दर।
स्वयं जगत के मालिक बैठे, कनक भवन के अंदर।।
सीताराम जी की शोभा, सुख खानी लागे... मोहे...

सहज सुहावनी जन्म भूमि, श्री रघुवर राम लला की।
जानकी महल सुचि सुन्दर शोभा लछमन जू के किलाकी।।
यहाँ के कण–कण से, प्रीति पुरानी लागे...... मोहे.....

जय सियाराम दण्डवत भैया, मधुरी बानी बोले।
करैं कीर्तन सन्त मगन मन, गली–गली में डोले।।
सीताराम नाम धुनि प्यारी, मस्तानी लागै...... मोहे......

प्रभु पद प्रेम प्राप्त करते सब, पीकर श्री हरि रस को।
जन 'राजेश' रहे नित निर्भय, फिकर कहो क्या उसको।।
जिनके मात–पिता रघुराज, सिया महारानी लागे..... मोहै.....

सीता राम गायेजा

सीताराम सीताराम सीताराम गायेजा।
श्री रामजी के चरणों में मन को लगाये जा।।

छोड़ सब रिश्ते बस मान यही नाता।
पिता रघुनाथ श्री जानकी माता।।
इसी भाव गंगा में डुबकी लगाये जा।। श्री राम....

दुनियाँ भर में काहे भटकता।
द्वारे द्वारे शीश पटकता।।
रामजी के चरणों में अलख जगाये जा।। श्रीराम....

क्यों करता आशा जन जन की।
दया दृष्टि जब रघुनंदन की ।
रामजी के चरणों में मौज उड़ाये जा।। श्रीराम........

राम नाम के हीरामोती

राम नाम के हीरा मोती, मैं बिखराऊँ गली गली।
ले लो रे कोई राम का प्यारा, शोर मचाऊँ गली गली।।

माया के दीवानों सुन लो, एक दिन ऐसा आयेगा।
धन दौलत और माल खजाना, यहीं पड़ा रह जाएगा।।
सुन्दर काया माटी होगी, चरचा होगी गली–गली। लेलो रे....

क्यों करता है मेरा मेरा, यह तो तेरा मकां नहीं।
झूठे जग में फँसा हुआ है, वह सच्चा इन्सान नहीं।
जग का मेला दो दिन का है, अन्त में होगी चला चली। लेलो रे...

जिन जिन ने यह मोती लूटे, वह तो माला माल हुये।
धन दौलत के बने पुजारी, आखिर वह बैहाल हुये।।
चाँदी सोने वालो सुनलो बात सुनाऊँ खरी–खरी।।

राम का गुण गान करिये

राम का गुन गान करिये

राम प्रभु की सभ्यता का, भद्रता का ध्यान धरिये।
राम के गुण गण चिरन्तन, राम गुन सुमिरन रतन धन।
मनुजता को कर विभूषित, मनुज को धनवान करिये ध्यान धरिये।

सगुन ब्रह्म स्वरूप सुन्दर, सृजन रंजन भूप सुखकर।
राम आत्माराम आत्माराम का, सम्मान करिये.....

तू दयालु दीन हौं

तू दयालु दीन हौं तू दानि हौं भिखारी।
हौ प्रसिद्ध पातकी तू पाप पुन्जहारी।।
नाथ तू अनाथ को अनाथ कौन मौसों।
मो समानआरत नहिं, आरति हर तोसों।।

ब्रह्म तू हौ जीव तू ठाकुर हौ चेरो।
तात मात गुरू सखा, तू सब विधि हितु मेरौ।

तोहि मोहि नाते अनेक मानिये जो भावैं।
ज्यों ज्यों 'तुलसी' कृपालु चरन शरन पावैं।।

ठुमक चलत रामचन्द्र बाजत पैजनियाँ

ठुमक चलत रामचन्द्र, बाजत पैजनियाँ
किलक-किलक उठत धाय, गिरत भूमि लटपटाय।
धाय मात गोद लेत दशरथ की रनियाँ।।
बिद्रुम से अरूण अधर, बोलत मुख मधुर मधुर।
सुभग नासिका में चारू लटकत लटकनियाँ।।
अंचल रज अंग झार, विविध भाँति सो दुलार।
तनमन धन वार डार, कहत मृदु बचनियाँ।।
मोदक मिश्री रसाल, जो भावे सोइ लेहु लाल।
और लेहु खेलन को, कंचन झुन-झुनियाँ।।
'तुलसीदास' अति आनन्द, देख के मुखारविन्द।
रघुवर छवि के समान, रघुवर छवि बनियाँ।।

फूलन की माला हाथ

फूलन की माला हाथ, फूली डोले आली साथ।
उजक झरोखे झाँके नन्दिनी जनक की ।।टेक।।

देखके पिया की शोभा, सिया जू को मन लोभा।
एक टक रह गई जैसे, पुतली कनक की।।फूलन।।

कुँअर है किशोर गात, कहै को पिता से बात।
छोड़ दो प्रतिज्ञा तात, धनुष तोड़न की।।फूलन।।

तुलसी हिये की जानी, तोड़ो है पिनाक तानी।
बाँस की धनुहियां जैसे, वारे के खेलन की।।फूलन।।

दर्शन दो श्रीराम
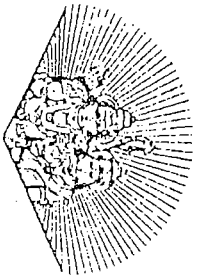
दरसन दो श्री राम हमारे हम है दास तुम्हारे।

तन मन धन सब अर्पण तेरे।
फिर भी प्रभु क्यों दुःख मोहे घेरे।

अज्ञान मिटाओ अवध बिहारी,
तुम जीते हम हारे।।

लाखों की तुमने बिगड़ी बनाई।
आके प्रभु हो जाओ सहाई।।

दीनन के तुम हो रखवारे।
माँ कौशल्या के प्यारे।।

जनम जनम की आस हमारी।
दर्शन देंगे अवध बिहारी।

निर्बल का तुम बल कहलाते।
तुम समरथ हम वारे।।

मेरे मन में राम

मेरे मन में राम तन में राम, रोम रोम में राम रे।
राम सुमिरले ध्यान लगा ले, छोड़ जगत के काम रे।।
बोलो राम, बोलो राम, बोलो राम राम राम।। टेक
माया में तू उलझा उलझा, दर दर धूल उड़ाये।
अब करता क्यूँ मनभारी, जब माया साथ छुड़ाये।।
दिन तो बीता दौड़धूप में, ढल जाये ना शाम रे।। बोलो राम...

तन के भीतर पाँच लुटेरे डाल रहे हैं डेरा।
काम क्रोध मद लोभ मोह ने तुझको ऐसा घेरा।।
भूल गया तू राम रटन, भूला पूजा का काम रे।।बोलो राम...

बचपन बीता खेल खेल में भरी जवानी सोया।
देख बुढ़ापा अब क्यूँ सोचे, क्या पाया क्या खोया।।
देर नहीं है अब भी वन्दे, ले ले हरि का नाम रे।। बोलो राम......

होरी खेलन आयो श्याम

होरी खेलन आयो श्याम, आज जाय रंग में बोरो री।

कोरे कोरे कलश भरो, वामे केशर घोरो री।
मुख पे मलो गुलाल, करो कारे ते गोरो री।। होरी...

पार परोसन लेओ बुलाय, आँगन में घेरो री।
पीताम्बर लेओ छीन जाय पहिराय देओ चोरो री।। होरी...

हरे बाँस की बाँसुरिया याकी तोर मरोरो री।
तारी दे दे जाय नचावो अपनी ओरो री।। होरी...

'चन्द्रसखी' की यही विनती, करो निहोरो री।
हा–हा खाय परे जब पैंया, तब जाय छोरो री।। होली.....

होरी खेलो तौ कुंजन चलौ

होरी खेलो तो कुन्जन चलो गोरी

एक ओर रहो सब वृजवनिता, तुम रहो राधा जू हमारी ओरी।।
चोवा चन्दन अतर अरगजा, लाल गुलाल भरो झोरी।।
ललित किशोरी प्रिया प्रीतम मिलि, खेलेंगे फाग सराबोरी।।

होरी पद

(1)

होरी में लाज न कर गोरी।
हम ब्रज के रसिया तुम गोरी, भली बनी है यह जोरी।
जो हम सों सूधें नहिं खेलो, श्याम करेंगे बरजोरी।
'नारायण' अब निकसि द्वार पै, छूटों नहिं वनि के भोरी।

(2)

दरसन दे चन्द्र वदन गोरी।
यह औसर नहिं सकुच करन को, फागुन में छैल करैं जोरी।
मुख निकास घूंघट पट में ते, ललित कपोल मलैं रोरी।
हीरा सखि हित ब्रज में बसके, लाज के काज न तजि होरी।

(3)

बन आयो रे रसिया होरी को।
मल्ल कांछ सिंगार धरयो है, याको फैंटा सीस मरोरी को।
सौंधे भीनी उपरैना सोहै, जाके माथे वेंदा रोरी को।
'पुरूषोत्तम' प्रभु कुँवर लाड़िलो, यह रसिया याही गोरी को।

(4)

ब्रज मण्डल देस दिखाय रसिया।
तिहारे ब्रज में मोर बहुत है, बोलत मोर फटै छतिया।
तिहारे ब्रज मे गैया बहुत है, पी–पी दूध भई पठिया।
तिहारे ब्रज में बन्दर बहुत है, सूनो भवन देखि धसिया।
'पुरूषोत्तम' प्रभु की छवि निरखत, तेरे चरण मेरे मन बसिया।

मेरी चुनरी में पड़ गयो दाग री

मेरी चुनरी में पड़ गयो दाग री, येसो चटक रंग डारो।।टेक।।

मोहू ते केतिक ब्रजसुन्दरी,
श्याम उनसो न खेलो फागरी।।
औरन को अचरा न छुअत है,
याकी मोही ते लग रही लाग री।।
बलि "बलिदास" वास ब्रज छाँड़ो,
ऐसी होरी में लग जाय आगरी।।

होरी खेलन ससुरारी

होरी खेलन ससुरारी, आये प्रभु अवध बिहारी।
प्रमुदित भये जनक पुरवासी, हरषीं सरहज सारी।
निरखि रामजू को मुख पंकज, लगी सुनावन गारी।।
बिकी विनमोल विचारी।।
ऐक कहै रंग नेक न घोरो, मानो बात हमारी।
इन पै कौनउ रंग चढ़ै न इनकी सूरत कारी
सखी हम जियमें विचारी।
धनुष वान तजि कैं कर कमलनि, धार लई पिचकारी
जन 'राजेश' देख रघुवर छवि बार–बार बलिहारी।
धन्य प्रभु लीला तुम्हारी।

होरी खेलत आज अवधवासी

होरी खेलत आज अवधवासी
राम लक्ष्मण भरत, शत्रुघन, जनक नन्दनी सब दासी
हिल मिल फाग परस्पर खेलत, राजकुंवर सब सुख रासी
'प्रेम कुंवर' फगुआ में भीजे, चरण कमल खिदमत खासी।।

ब्रज में होरी मचाई

ब्रज में होरी मचाई, हमें ऐसी होरी न भाई।

इतते आई कुमरि राधिका उतते कुमर कन्हाई।
खेलत फाग परस्पर हिल–मिल, शोभा वरणि न जाई।
नन्द घर वजत बधाई।

बाजत ताल मृदंग झाँझ ढप मंजीरा शहनाई।
उड़त गुलाल लाल भये बादर, केशर कीच मचाई।
मानों मधवा झर आई।

राधे जू सेन दई सखियन को झुण्ड–झुण्ड चलि आई।
लपक लपक लाई श्याम सुन्दर को, यह कहूँ भाग न जाई।
करौ अपने मन भाई।

छीन लियो मुरली पीताम्बर सिर सो चुंदरी उड़ाई।
बैंदी भाल नैन बीच कजरा, नक–बेसर पहराई।
मानौ नई नारि बनाई।

कहाँ रे गये तेरे पिता नन्द जूँ, कहाँ यशोदा माई।
कहाँ रे गये तेरे सखा संग के, कहाँ गये बल भाई।
जो लाल कूँ लेई छुड़ाई।

फगुआ लिये बिन जान न दैहो, कोटिन करों उपाई।
फगुआ दियौं है मंगाय श्याम ने, कर विनती समझाई।
लूटि दधि माखन खाई।

धन गोकुल धन–धन वृन्दावन, धन यमुना यदुराई।
राधा कृष्ण जुगल जोड़ी पर 'नन्ददास' बलिजाई।
चरण में शीश नवाई।।

होरी हो ब्रजराज दुलारे
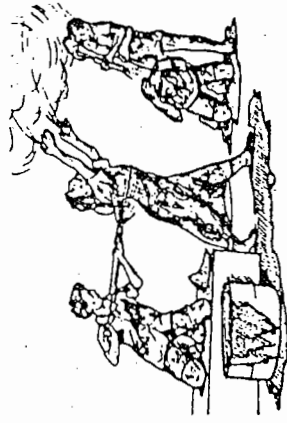
होरी हो ब्रजराज दुलारे

बहुत दिनन से तुम मन मोहन, फाग ही फाग पुकारे।
आज देखि लेऊ सैर फाग को, पिचकारिन के फुहारे।।
चलत जहाँ कुमकुमा न्यारे।

अब क्यों जाय छिपे जननी ढिंग ये द्वै वापन बारे।
कै तो निकस कै होरी खेलो कै मुख से कहो हारे।।
जोर कर आगे हमारे।।

निपट अनीति करी मनमोहन, रोकत गैल गिरारे।
'नारायण' अब खबर परैगी, नेक तो आई के द्वारै।।
सूरत अपनी तू दिखारे।।

राधाकृष्ण की जोरी

राधाकृष्ण की जोरी, सखिन मिलि खेलत होरी।।

कहै राधा सुन ढीठ कन्हैया में वृषभानु किशोरी।
हमरी तुमरी ना कछु बरावरी, तुम कारे हम गोरी।।
तनिक निज ओर लखों री।

हम तो है राजा की बेटी, काम तुम्हारों चोरी।
रंग में रंग मिलत नहि ऐको नाहक करत ठठोरी।
मेरे मुख मलियो ना रोरी।।

सब सखियाँ मिल पकड़ कृष्ण को लाई यशोदा ओरी।
लै साँटी यसुदा जी दौरी बोले कृष्ण निहोरी।
सुनो मैया कछु मोरी।

यह सबही ग्वालिनी मदमाती अब बनती है भोरी।
मारि मारि के मोहि नचावै प्रेमी कहे झकझोरी।
कृष्ण यो मातु ठगोरी।

कैसो ये देस निगोरा

कैसो ये देस निगोरा, जगत होरी ब्रज होरा।

गें यमुना जल भरन जात रही, देखि रूप मेरा गोरा।
गोते कहै नेक चलो कुंजन में, तनक तनक से छोरा।।
परे आँखन में फोरा।....

जियरा देख डरानो री सजनी, लाज सरम की ओरा।
कहा बालक कहा लोग लुगाई, एक ते एक ठठोरा।
काहू सो काँहे को जोरा।

निपट, निडर नन्द को री सजनी चलत लगावत चोरा।
कहत गुमान सिखाय सवन मेरो सबरों अंग टटोरा।।

का होत हमें रंग बोरे में

का होत हमें रंग बोरे में,
कढ़ जैहै चूनरी निचोरे में।
नव रंग सों नित रंगत रंगीलो,
मैं तो रंगी श्याम रंग तोरे में।
गोरो गात विगार न मोरौ,
बसत सांवरो गोरे में।
अब 'विनीत' सिगरौ जग जानौ,
तुम मोरे, मैं तोरे में।

झूलन पद

छाय रही अजब बहार

छाय रही अजब बहार रे हाँ झूलें बाँके बिहारी।
बाँके बिहारी, झूले कुँज बिहारी।।
सोने को है सुघर हिंडोरा, साज सज्यो सुन्दर अनमोला।
झूला झुलावैं बृजनार रे हाँ, झूले बाँके बिहारी।।
चित को चुरावै बाँकी झाँकी, सूरत मूरत अजब अदा की।
पड़ रही अतर फुहार रे हाँ, झूले बाँके बिहारी...
बंधनवार बंधी हरियाली, मंदिर में है धूम निराली।
है रही जै–जैकार रे हाँ, झूले बाँके बिहारी....
अस्तुति करत मगन नर नारी, महिमा तीन लोकते न्यारी।
तन मन धन बलिहार रे हाँ, झूले बाँके बिहारी।।

झूले नवल हिंडोरे

झूले नवल हिंडोरे, पिय प्यारे संग बनठन श्यामा।
रतन जड़ित अति रूचिर हिंडोरा तामैं,

रचना अनेक द्रुम सावन के कुंज विच।
बाजत मृदंग आदि गावत सखी समूह, कोटि काम रतिवामा...
शीतल सुगंध मंद वायु के प्रसंग तहाँ,
घेरि–घेरि आवत वलाहक के वृंद तहाँ।
नन्हीं–नन्हीं बुदियन वरसन के समय,
छवि अति शोभित सिया रामा...
शीस को नवाय ईश को मनाय के मुनीश,
बार–बार विनय करत कर जोरी–जोरी।
नृपति किशोर और किशोरी जू आनंद रहें,
यह हमार मन कामा...

झूलन चलो हिंडोरा

झूलन चलो हिंडोरा वृषभान नंदनी
सावन की तीज आई, घनघोर घटा छाई।

मेघन झरी लगाई, परै बूंद मंदनी।।...
सुन्दर कदम की डारी, झूला पर्‌यो है प्यारी।
पहनो सुरंग सारी, मानो विनय हमारी।
मुख चन्द की उजारी, मृदु हास बंदनी।।

मम मान सीख लीजे, सुन्दरि न देर कीजे।
हमसों विलोक जीजे, जो गति गयन्दनी।।
शोभा लखो विपिन कीं, फूली लता सुमन की।
सुन अरज रसिक जन की, चरण बन्दनी।।...

हिंडोरे झूलत दोउ सरकार

हिंडोरे झूलत दोउ सरकार।

श्री मिथलेश लली संग राजत, श्री अवधेश कुमार...
दामिनी लरज गरज घन वरसत, रिमझिम परत फुहार....
झुकि–झुकि लाल लली मुख निरखंत, मानत मोद अपार....
मानहुँ अरूण "बिन्दु" पंकज पर, भ्रमर भ्रमत बहुवार....

आज तो अवध सैंया

आज तो अवध सैंया, झमकि झुलाऊँगी
मीठी–मीठी तान गाय, मंद–मंद मुसकाय
झोंकन को मार हिय, सुख न समाऊँगी
लट सुर झैहों, उर झैहों मन अपनो री
कंठ सो लगाय हिय, तपन बुझाऊँगी
पान को पवहिहों ताकौ, उगलिन पैहों आली
मोहिनी बदन लखि, दृगन जुड़ाऊगी।

झूलत सीताराम हिंडोरे

झूलत सीताराम हिंडोरे
श्याम गौर अभिराम मनोहर, रति पति के चित चोरे
नील पीत वर वसन लसत तन, उठत सुगंध झकोरे
सहचरि हरषि झुलावहिं गावहिं, छवि निरखत तृन तोरे
मन्द–मन्द मुसकात छबीलो, रमकन थोरे–थोरे
अति सुकमारि 'अग्र' की स्वामिनी, डरपि गहति पट छोरे।

रंगीले तेरी झूलन है अति प्यारी

रंगीले तेरी झूलन है अति प्यारी
झूलन झुकन हंसन लालन की, चितवन नैन कटारी
श्याम गौर दोउ अंग मनोहर, रूप रास उजियारी
कहत सखि तुम धीरे झूलो, डरपति सिया सुकमारी
'सरयू सखी' ये युगल कुंवर पर, कोटिन रतिपति बारी।

झूलन में आज सज धज के

झूलन में आज सज धज के, युगल सरकार बैठे हैं
अलिन मन मोहने मानो, सुछवि श्रृंगार बैठे हैं
युगल मुख चन्द हेरन को, सभी आंखे चकोरी हैं
परस्पर में प्रिया प्रीतम, बने गलहार बैठे हैं
मजे से झूलते झूला, कभी मचकी भी लेते हैं
रसीली मैथली संग में, रसिक सरदार बैठे हैं
मधुर मुसुकाय सुनते हैं, सरस संगीत सखियों के
गुणों पे दाद भी देते, सजन दिलदार बैठे है
कृपामय नयन कोरों से, विहंसि हंसि हेरते दोनों
'लतारस कान्ति' के हिय के, सकल सुखसार बैठे है।

झूलैं दोउ रसिया, झूलन बांकी

झूलैं दोउ रसिया, झूलन बांकी
पगे परस्पर, प्रीति रीति रस, बनी अनोखी झाँकी
उघरत मोद मनोरथ पल–पल, रहत नहिं तिल ढांकी
गावहिं गीत सनेह सनी सखि, युगल सु छवि छन छांकी
'युगल अनन्य अली', झूलन लखि, चपल चातुरी थाकी।

प्यारी झूलन पधारौं

प्यारी झूलन पधारौं, झुकि आये बदरा
सजि भूषण वसन, अंखियन कजरा
मान कीजिए काहे को, सुख लीजिए आली
तू तो परम सयानी, मिथलेश की लली
देखो अवध ललन, पिया आगे हैं खड़े
रस बरसैं 'सुधामुखी' जब पायन पड़े

झूलत प्यारे राजदुलारे

झूलत प्यारे राजदुलारे, झमकि झुलावत गोरी गुजरिया
आज हिंडोरे झूलत सिय–पिय, रिमझिम बरषत कारी बदरिया
पड़त फुहार पीत पट भींजत, जनक लली जू की सुरंग चुनरिया
क्रीट मुकुट लट कुंवरि संवारत, चिकुर चन्द्रिका पिय मन हरिया
रमकि झमकि पिय पेंग बढ़ावत, झुकि–झुकि जात कदम की डरिया
श्री जनक लली सरयू जल परसत, नभ से होत सुमन की झरिया
कबहुँ झमकि पिय सिय को झुलावत, गावत मोद भरि राग कजरिया
रस बरसत जब करत चकोर दृग, सखि छवि लखि जावैं बलि हरिया।

चलो पिया वाही कदम तरैं झूले

चलो पिया वाही कदम तरैं झूले
झुकि रही लता अति सघन प्रफुल्लित, कालिन्दी के कूलैं
बोलत मोर चकोर कोकिला, अति कुन्जित मन फूलैं
ललित किशोरी मग तरावत, कर–कर बतियां भूलैं

आज घन बूंदरिया बरसे

आज घन बूंदरिया बरसै
भीजै नवल लाल, नव–नव सखियन संग बूंदरिया बरसै
अग गग गग गग गगन्न गरजैं, नन्हीं–नन्हीं बूंदन मेहा बरसै
श्याम सुन्दर देखौ (मोरी अली), चलत पवनियाँ
सननन नन नन नादरिया हीम, लोग तननन नन नन
घन बूंदरिया बरसै।

चल झूलिये हिंडोरे, वृषभानु की लली

चल झूलिये हिंडोरे, वृषभानु की लली
तिहारे काज आज इक मैंने, बिरची कुंज गली
रत्न जटित कौ वन्यौ हिंडोरा, कैसी झूला झली
ब्रज वनिता झूलत अनेक वह, एक–एक नवली
शब्द करत जहाँ की कोकिला, गुंजत मोर बली
रसिक बिहारी की सुन वाणी, तुरतहिं कुँवरि चली।

सवैया

(1)

कानन दूसरौ नाम सुनै नाहि, एकहि रंग रंग्यो यह डोरो।
धोखेहु दूसरो नाम कढ़ै रसना रसि बाँधि हलाहल बोरो।।
ठाकुर चित्त की वृत्ति यही, हम कैसेहु टेक तजैं पल भोरों।
बावरि वे अंखियां जरि जाय, जो सांवरो छोड़ निहारित गोरो।।

(2)

जब ते दरसे मन मोहन जू, तब तें अंखियां ए लगी सो लगी।
कुल कानि गई सखि बाहि घरी, जब प्रेम के कंद पगी सो पगी।।
कहैं ठाकुर नेह के नैनन की, उर में बनी आनि खगी सो खगी।
तुम गांवरे नांवरे कोउ धरौ, हम सांवरे रंग रंगी सो रंगी।।

(3)

नन्द लाल निहार लिये जबतें, निज देह न गेह संभारन दे।
धरि धीरज बोल उठी बरनी, पद नीरज की रज झारन दे।।
पुतरी कह सामने से हट जा, अंसुआ कह पाये पखारन दे।
पलकें कहें मूँदले मोहन को, अंखिया कहैं औंर निहारन दे।।

(4)

मन मैं है बसी वस चाह यही, प्रिय नाम तुम्हारा उचारा करूँ।
बिठला के तुम्हें मन मंदिर में, मन मोहिनी रूप निहारा करूँ।।
भर के दृग पात्र में प्रेम का जल, पद पंकज नित्य पखारा करूँ।
वन प्रेम पुजारी तुम्हारा प्रभु, नित आरति भव्य उतारा करूँ।।

(5)

प्रेम पगे जो रंगे रंग सावरे, माने मनाये न लालची नैना।
धावत है उत ही जित मोहन, रोके रूके नहिं घूँघट ऐना।।
कानन को कल नाहि परे, बिन प्रीति में भीजे सुनै मृदु बैना।
'रसखान' भई मधु की मखियां, अब नेह को बंधन क्यों हु छुटेना।।

(6)

काहै को बैध मुलाकात हो मोहे, रोग लगाय के नारि गहोरे।
जा मधुआ मधुरी मुस्क्यान, निहारे बिना कहौ कैसे जियोरे।।
चन्दन लाल कपूर मिलाय, गुलाब सो मुखड़ा दुराय धरोरे।
और इलाज कहूँ न बनै, बृजराज मिलें सो इलाज करोरे।।

(7)

शेष गणेश महेश दिनेश, सुरेस हू जाहि निरंतर ध्यावें।
जाहि अनादि अनन्त अखण्ड अखेद, अभेद सुवेद बतावै।।
नारद से शुक व्यास रटैं, पचिहारे तऊ पुनि पार ना पावै।
ताहि अहीर की छोहरियां छछिया भरि छाँच पे नाँच नचावै।।

(8)

दीनदयाल सुने जब तें, तब ते मन में कछु ऐसी बसी है।
तेरो कहाय के जाऊँ कहां अब तेरे ही नाम की फेंट कसी है।।
तेरो ही आसरो एक मलूक नहीं, प्रभु सो कोऊ दूजो जसी है।
ऐ हो मुरारि पुकारि कहूँ अब मेरी हंसी नांहि तेरी हंसी है।।

(9)

कौन ठगोरी करी हरि आज बजाय के बांसुरिया रंग भीनी।
कान परी जिनके छिन, ही कुल लाज, विदा उनकी कर दीनी।।
घूमे घरी–घरी नंद के द्वार, नवीनी कहूँ कहूँ बाल प्रवीनी।
या बृज मंडल में रसखान सौ कौन भटू जो लटू नहिं कीन्ही।।

(10)

लालन एक विनय सुनियो अब मेरी गलीन में अइयो ना।
अइयो तो करूणा करिके हंसि टेरि सुनाइयो गाइयो ना।।
गइयो तो अधरा धरि के मुरली धुन मन्द बजाइयो ना।
सरसाइयो न उर प्रेम विभा, पुनि आइयो तो तुम जाइयो ना।।

(11)

बृज धूरि ही प्रान सौ प्यारी लगै बृज मंडल मांहि बसाय रह्यो।
रसिकों के सुसंग में मस्त रहूँ, जग जाल सौ मोहि बचाये रहो।।
नित बांकी यह झाँकी निहारा कहूँ, छवि छाक सौ नाथ छकाय रहो।
अहो बांके बिहारी यही विनती मेरे नैन सो नैन मिलाय रहो।।

(12)

वह और की आस करे ना करे जिसे आश्रय ही हरिनाम का है।
उसे स्वर्ग से मित्र प्रयोजन क्या, नितवासी जो गोकुल धाम का है।
बस सार्थक जन्म उसी का जहाँ, हरे कृष्ण जो चाकर श्याम का है।
बिना कृष्ण के दर्शन जग में यह जीवन ही किस काम है।

(13)

मेरो स्वभाव चितैवे को माई री, लाल निहारी के बंशी बजाई।
वा दिन सों मोहि लागि ठगोरी सी लोग कहैं लखि बाबरी आई।।
यों रसखान घिरो सिगरो बृज, जान हैं सब जिय की जियराई।
जो कोई चाहै भलौं अपनो तो नेह न काहू सो कीजिए माई।।

(14)

मोर के पंख के फूलन के सिर मोर महाछवि छावत है।
बहुधातन रंग ते रंगित अंग, हिये वननाल सुहावत है।।
लकुटि कर में कटि में कसि श्रृंग मनोहर वेणु बजावत है।
हरि नाम बुलावत है वछरा, नद नंदन यूँ बृज आवत है।।

(15)

मोरन मुकुट माथे हाथ में लकुट राजे
साजै गुंजमाल गले ललित रतन ते।
सुन्दर कपोल श्रुति कुण्डल झलक राजै,
जुलफ अनमोल भरे गोरज परनते।
गायन के पाछे पाछे काछनी को काछ काछे
गौरी राग गावत गबावत सखानते।
आनंद के कंद बृज लोगन चकोर चंद,
मंद मंद आवत गोविन्द वृन्दावन ते।।

(16)

पुत्र की बुराई मेरे कसके करेजे मांहि,
मेरौ प्राण प्यारो तेरों कहा कर आयो है।
मोसों कहो कोटि कान्हा को न कछू कहो
जानि कैसे करि मैंने एक पूत पायो है।
माखन को माट लेके द्वार पै यशोदा बैठी
दूनों दूनों लेव वीर जाको जे तो खायो है।
गोद में पसारत हूँ गोरस के काज आली,
गारीमत देवो री मो गरीबनी को जायो है।

(17)

प्रेम की पिपास देख देख निज प्रेमियों को
प्रेम का समुद्र सीमा तोड़ के बहाया है।
भावुक रसीले जन निराश न हो गे अब
कामना की पूर्ति हेतु कल्पतरू लगाया है।
चिन्तामणि जटित चारू चादर विछाई यहाँ
कुंज प्रति कुंज भाँति-भाँति से सजाया है।
भारत का भूषण तिलक तीनों लोकों का,
भक्तों के वास हेतु वृन्दावन बनाया है।।

(18)

खेलिये फाग निसंक है, आज मयंक मुखी बड़ो भाग हमारो।
लेहु गुलाल दोऊ कर में पिचकारिन रंग हिए तह मारो।।
भावे तुम्हें सो करो सोहि लालन, पाँव पड़ी जनि घूँघट टारौ।
बीर की सौं तुम्हें देखि है कैसे, अवीर तो आँख बचाय के डारो।।

(19)

ऊधम ऐसो मचो बृज में सब रंग तरंग उमंगन सीचै।
दे पिचकारिन छज्जन छातिन है छवि छाजत केसरि कीचै।।
त्यों 'पद्माकर' होहूं गई हुती, पीछे गोपाल गुलाल उलीचैं।
एकहिं संग जो मैं रपटी, तहूँ वे भये ऊपर मैं भई नीचैं।
फाग की रैनिकी अँधेरी गलिन में मेल भयो सखि सांवरे जीको।
हैं धरलीन अचानक दौरि लगावन काज गुलाल कौ टीको।।
बाने गुलाल अली, जब लीन्हौ मुठी में अबीर सो नीको।
बस्त्रहुँ छाँड़ि कन्हैया गये न भयो सखि हाय मनोरथ जीको।।

(20)

कवि कुल कमल दिनेश श्री गुसाई जू की।
कलदेन हारी कलि, कविता कमाल की।
विकल विहाल जनु, वाँच के निहाल भये।
गली नहीं दाल या कराल कल काल की।
वेदन को ज्ञान है प्रमान है पुरानन को
ग्रन्थ मै 'राजेश' राजे रामनाम माल की।
ठोंकि ठोंकि ताल कूँदे केते अभिमानी किन्तु।
काहू ने न पाई थाह, तुलसी के ताल की।।

(21)

ये पानी है 'राजेश' मानस कौ, परसै हिय पाहन होत है पानी
पानी कृपा करिता बदरा, बरषै सरसै अंखियन में पानी।।
पानी डुबावत भाव में है, भव पानी के पार पठावत पानी।
पानी के तेज गुमानन को, पल मे यह पानी उतारत पानी।।

(22)

श्याम तन श्याम मन, श्याम ही हमारो धन।
आठो याम ऊधौ हमें श्याम ही सों काम है।।
श्याम हिये, श्याम जिये, श्याम बिन नाही तिये,
आँधे की सीलाकरी, आधार श्याम नाम है।
श्याम गति श्याम मति, श्याम ही है प्राण पति
श्याम सुखादाई सो भलाई शोभाधाम है।
ऊधौ तुम भये बौरे, पाती लेके आये दौरे,
योग कहाँ राखें यहाँ रोम–रोम श्याम है।

(23)

आवत मीत बसंत के मिटे शोक संताप,
यदि सुरीला साज हो, और हो बसंत आलाप।
हो बसंत आलाप, गुनीजन गावैं होरी,
हो बागो मे पुष्प और माथे पे रोरी।
नर नारिन के झुण्ड पहन पीताम्बर धावत,
देखें सब सुख स्वप्न, सजै जबै ऋतु राजा आवत।।

(24)

दीन चहै करतार जिन्हें सुख, कौन रहीम सकै तोहि टारै।
उद्यम पौरूश कीन्हे बिना, धन आवत आप ही हाथ पसारे।
देव हंसे सब आपस में, विधि के प्रपंच न जात विचारे।
बेटा भयो वसुदेव के द्वार, और घुंघरू बाजत नंद के द्वारे।।

(25)

प्रहलाद तारे जिन तात को तमासो देखों
ध्रुवहु को तारे जिन बालापन गारो है
मोरध्वज तारो, सुत शीष पे चलायो आरो
हरिशचन्द्र तारे, जिन सत्यहू न टारो है
पहले उन भक्ति कीन्हीं, पाछे तुम मुक्ति दीन्हीं
तारवो कहाँ है, ये तो वंज व्योपारो है
तारौ तो तारौ, नहिं नाम पलट डारौ,
बिना भक्ति तारौ तो तारवो तुम्हारौ हैं

(26)

जैसी ये ललित लड़ैती मिथलेश जू की
तैसो ही दशरथ को सलोनो रस भीना है
जाय देख लाजत रति, होत है विकल मति
याकी छवि देख, पंचदेव मन छीना है
ये हो मुरार, जनकपुर की नारि कहे
ये तो संयोग , विधि हू ने रच दीना है
शंभुधनु टूटै या न टूटै बात सांची कहें
सिया सोने की अंगूठी, राम नीलम नगीना है।

(27)

एक दिना नन्दलाल, वृषभानु की गली में जाये
बांसुरी बजाये नाम, राधिका उचारो है
चौंक परी राधे और झरोंखों सो लागी झांकि
न पायो श्याम गिरि, खाके तमारो है
मइया अकुलानी, और पड़ोसन सों लागी कहन
आज कोऊ स्याने को, आन परो फेरो है।
संग की सहेली, सब आपस में करत बात
भूत नहिं लागे याय, नन्द पूत लागो है।

(28)

ये हो बृजरानी, आज कल लोकलाज छोड़ दोऊ
सीखे हैं सबहू विधि, सनेह सरसायवो
यूँ रसखान दिन दो में बात फैल जैहे
कहाँ लौं सयानी, चन्द्र हाथन छुपायते
आज ही निहारो, वीर, निपट कलिन्दी तीर
दोऊ कौ दोउन से, मुर मुसकायवो
दोऊ परैं पइयां, दोऊ लेत है बलइयां
उने भूल गई गइया, उनें गागर उठायवो

(29)

गिरजा के विवाह में, उछाह भयो तीन लोक,
भांवर के पड़े से सुख होत नारि नर को
नाइन मृगनयनीजब हंस हंस के कहन लागी,
लै लैहों नेंग जब उठन देहों हर को।
लीनो है नांग मुठी, दीन्हों जब नाइन को,
मारी फुसकार छोड़ भाग चली घर को
मण्डप के नीचे, बैठे देव सब हंसन लागे,
छूंछी न जाओ नैंग लिये जाओ बर कौ।

(30)

देखत ही सिय मूरत को
निज अंग विभूरत खोवन लागे।
मंत्री सबयमाने। मौन खड़े
मिथलेश की मूरत जोवन लागे।।
मानो विराग की राख महि
दृग अंजन 'बिन्दु' सो धोवन लागे।
देह की तो मरयाद मिटी
कह जानकी–जानकी रोवन लागे।।

संकीर्तन धुनें
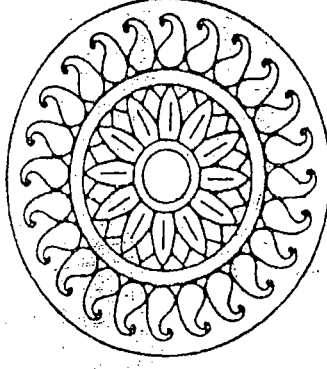
स्वागतं कृष्णः शरणागतं कृष्णः, स्वागतं सुस्वागतं शरणागतं कृष्णा।
हे केशवः कृष्णः हे माधव कृष्णः, मधु सूदनः कृष्णः मन मोहन कृष्णा।।1।।

गिरिराज धरण प्रभु तेरी शरण, प्रभु तेरी शरण हरि तेरी शरण।।2।।

राधे गोविन्दा जय जय राधे गोविन्दा।
नटवर नागर नन्दा, जय जय राधे गोविन्दा।।3।।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।।4।।

जय राधे राधे गोविन्द, गोविन्द राधे, गोविन्द राधे गोपाल राधे।।5।।

कृष्ण–कृष्ण मुकुन्द जनार्दन, कृष्ण गोविन्द नारायण हरे।।6।।

हरी–हरी गोविन्द नारायण, नारायण हरि नारायण।।7।

जय गोविन्द गोविन्द गोपाला जय मुरली मनोहर नन्दलाला।।8।।

मधुर–मधुर नाम सीताराम सीताराम।
राजा राम राम राम, सीताराम् राम राम।।9।।

राधा, राधाकृष्ण राधा।
गोविन्द गोविन्द गोपाला, मुरली मनोहर नन्दलाला।।10।।
हमारो धन राधा श्री राधा श्री राधा।

परमधन राधा राधा राधा राधा राधा।।11।।
गोविन्द मेरो है गोपाल मेरो है।

श्रीबाँके बिहारी नन्दलाल मेरो है।।12।।

राधे राधे राधे राधे राधे गोविन्दा।
राधे गोविन्दा भजो वृन्दावन चन्दा।।13।।

सब खुशी भये नर नारी।
आज प्रगटे कृष्ण मुरारी।।14।।

आजा आजारे कन्हाई, तेरी याद आई।।15।।

श्री राधे, श्री राधे राधे राधे प्रिया प्रिया ।।16।।

निकुन्ज मे विराजे घनश्याम राधे–राधे।।17।।

राधे बरसाने वारी, तेरो पुजारी है बनवारी।।18।।

राधे–राधे राधे राधे राधे राधे बोल।
वरषाने की गलियन डोल।।19।।

जाने राधे को नाम ले लियो,
श्याम ने बाको भलो कर दियो।।20।।

आरती बालकृष्ण की कीजै

ारति बाल कृष्ण की कीजै, अपनो जनम सुफल कर लीजै।
ो यशुदा को परम दुलारो, बाबा की अँखियन को तारो।
ापिन के प्राणन सो प्यारो, इन पर प्राण न्यौछावर कीजै।।
आरती......

लदाऊ को छोटो भैया, कनुआ कहि कहि बोलत मैया।
रम मुदित मन लेत बलैया, इन कूँ सरबस अर्पण कीजै।।
आरती....

ा राधावर कुँअर कन्हैया, ब्रजनन को नवनीत खवैया।
खत ही मन लेत चुरैया, यह छवि नैनन में भरि लीजें।।
आरती......

तरि बोलन मधुर सुहावै, सखन मध्य खेलत सुख पावै।
ाई सुकृति जो इन कूँ ध्यावे, अब इन कूँ अपनो करि लीजै।।
आरती.......

हे गिरधर

हे गिरधर तेरी आरती गाऊँ, श्रीबाँके बिहारी तेरी आरति गाऊँ
आरति गाऊँ प्यारे, तुमको रिझाऊँ...
मोर मुकुट माथे पे सोहै, प्यारी बंशी मुनिमन मोहै
देख छवि मैं बलि–बलि जाऊँ...... हे गिरधर.....
चरणों से निकली गंगा प्यारी, जिसने सारी दुनियां तारी
उन चरणों के मैं दरसन पाऊँ.... हे गिरधर......
दास अनाथ के नाथ आप हो, सुख दुख जीवन साथ आपहो,
उन चरणों को मैं शीस झुकाऊ........हे गिरधर.......
श्री हरिदास के प्यारे तुम हो मेरे मोहन जीवन धन हो
प्यारी छवि तेरी मन में बसाऊँ......... हे गिरधर.....

आरती श्री भागवत जी की

आरती श्री भागवत जी की, करत पवित्र भावना हिय की।
नारायण मुख कीवाणी, पढ़ते ब्रह्मा और ब्रह्माणी।
र पार्वती सुखमानी, कृष्ण कथा सुख धाम हरी की।
आरती.........

कादिक से शेष बखानी, नारद मुनी परम सुख मानी।
स सुनी सर्वोपरी जानी, लिखी पुराण तिलक की टीकी।।
आरती........

ी शुकदेव व्यास ते सुनि के, कही परीक्षित नृप से गुनि के।
ंगातट संतन कूँ चुनि के, ज्ञान विराग भगति युवती की।।
आरती........ ...

कथा भागवत जो नित गावै, आप सुनै औरें को सुनावे।
नैश्चय कृष्ण चन्द पद पावें, प्रेम सिन्धु रस बिन्दु अमी की।।
आरती...........

ओम जय जगदीश हरे

ओ३म् जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करें।। ओ०........

जो ध्यावे फल पावे, दुख विनशे मन का ।। प्रभु.....
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।। ओ०.......

मात–पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी। प्रभु०.....
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी।। ओ०........

तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी। प्रभु०.....
पार ब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी।। ओ०.........

तुम करूणा के सागर तुम पालनकर्ता। प्रभु०........
मैं मूरख तुम ज्ञानी, कृपा करो भर्ता।।ओ०.......

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती। प्रभु०.........
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमती।। ओ०.....

दीन बंधु दुख हर्ता, तुम ठाकुर मेरे।। प्रभु०.......
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ।। ओ..........

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा। प्रभु.०........
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा।।

भागवत भगवान की आरती

श्री भागवत भगवान की है आरती

पापियों को पाप से है तारती

ये अमर ग्रन्थ ये मुक्ति पंथ, ये पंचम वेद निराला है।

नव ज्योति जगाने वाला है।

हरिनाम यही, हरी धाम यही, जग के मंगल की आरती

पापियों............

ये शांति गीत, पावन पुनीत, पापों को मिटाने वाला है

हरि दरश कराने वाला है।

ये सुख करनी, ये दुख हरनी, श्रीमधु सूदन की आरती।।

पापियों............

ये मधुर बोल, सतपंथ खोल, सन्मार्ग दिखाने वाला है,

बिगड़ी को बनाने वाला है।

श्री राम यही, घनश्याम यही, प्रभु की महिमा की आरती।।

पापियों............

श्री रामायण जी की आरती

आरति श्री रामायण जी की।

कीरति कलित ललित सियपिय की।।

गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद।

बाल्मीकि बिग्यान बिसारद।।

सुक सनकादि सेष अरू शारद।

बरनि पवन सुत कीरति नीकी।।1।।

गावत वेद पुराण अष्टदस।

छओ शास्त्र सब ग्रन्थन को रस।

मुनि जन धन संतन को सरबस।

सार अंस संमत सबही की।।2।।

गावत संतत संभु भवानी।

अरू घट संभव मुनि बिग्यानी।।

व्यास आदि कबिबर्ज बखानी।

काक भुसुंडि गरूड के ही की।।3।।

कलिमल हरनि विषय रस फीकी।

सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की।

दलन रोग भव मूरि अमी का।

तात मात सब विधि तुलसी की।। 4।।

श्रीमद् भागवत के कुछ मूल मंत्र

विद्या प्राप्ति मंत्र

ॐ नमो हयग्रीवाय मह्यं मेधां प्रज्ञां प्रयच्छ स्वाहा।

पति प्राप्ति मंत्र

कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरी।
नन्द गोपसुतं देवि पतिंमें कुरु ते नमः।।

कष्ट निवारक मंत्र

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणत क्लेश नाशाय गोविन्दाय नमो नमः।।

वैभव म.जगताप
मो.8408049323